पंचम अध्याय

हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों का शिल्प-पक्ष

पंचम अध्याय

हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों का शिल्प-पक्ष

5.0 भूमिका :

जिस तरह एक कुंभकार के घड़े की उत्कृष्टता बहुत सारी परिस्थितियों पर निर्भर करती है, जैसे - मिट्टी की किस्म, उसकी गुँथाई, बेहतर चाक, कुंभकार की दक्षता आदि । उसी तरह किसी भी उपन्यासकार के उपन्यासों की रचना श्रेष्ठता बहुत सारे कारकों पर निर्भर करती है, यथा - कथानक परिवेश, कथानक का सामाजिक एवं परिस्थितिजन्य सटीकता, उसमें प्रयुक्त शब्द एवं वाक्य, भाषा, भाषा-शैली, उसका उद्देश्य आदि । उपन्यासों में समाहित इन कारकों द्वारा उनकी श्रेष्ठता का आकलन किया जाता है । अतः प्रस्तुत अध्याय में उपन्यासों के शिल्प-पक्ष का अध्ययन किया गया है ।

5.1 शिल्प-पक्ष :

शिल्प शब्द की व्युत्पति संस्कृत के 'शिल्पम्' से हुआ है, जिसका शाब्दिक अर्थ "मूर्ति कला, कारीगरी, हुनर"[1] होता है । वृहद हिन्दी कोष के अनुसार "शिल्प से अभिप्राय हाथ से कोई वस्तु तैयार करने अथवा दस्तकारी या कारीगरी से है ।"[2] साहित्य की रचना में जबसे साहित्यिक सौन्दर्य का विवेचन होने लगा, तब से शिल्प शब्द का प्रयोग साहित्य में होने लगा है ।

---

1. चतुर्वेदी, द्वा॰ प्र॰ एवं प्रसाद, पं॰ ता॰ *संस्कृति शब्दार्थ कौस्तुभ.* पृ. 115.
2. *वृहद हिन्दीकोश.* ज्ञान मंडल लि॰ बनारस. पृ. 1334.

साहित्यिक क्षेत्र में शिल्प का विशेष अर्थ होता है । साहित्य और कला का आपस में घनिष्ठ संबंध है । कला के प्रत्येक रुप में कलाकारों द्वारा उसकी अनुभूति, मनोभाव, अभिव्यक्ति आदि का प्रयास होता है । समयानुरूप मनुष्यों की अनुभूतियाँ, मनोभाव इत्यादि बदलते रहते हैं । अतः कला को नया विषय मिल जाता है । साहित्य में इसकी नई सौन्दर्याभिव्यक्ति होती है । शब्दों और वाक्यों के उचित प्रयोग से साहित्य की सुन्दरता बढ़ती है । अपनी कल्पना, संवेदना एवं अनुभूति का शब्दों के कुशल प्रयोग से कोई भी रचनाकार अपने पाठकों को सौन्दर्यानुभूति प्रदान करता है । रचनाकारों के कुशल प्रयोग का यही रूप शिल्प कहलाता है । साहित्य की सभी विधाओं में 'शिल्प' का विशेष महत्त्व है । अलग-अलग विधाओं में शिल्प का रूप अलग-अलग होता है । "नाटक, उपन्यास आदि के अपने-अपने विशिष्ट रूप कला विषयक सिद्धान्त तथा मूल्य है, इसलिए उपन्यास का शिल्प नाटक के शिल्प से भिन्न है और नाटक का शिल्प कहानी के शिल्प से भिन्न है ।"[1]

औद्योगिकीकरण के इस दौर में जीवन की जटिलता, तटस्थता एवं संघर्षशीलता ने उपन्यास शिल्प को प्रभावित किया है । नए भाव बोधों को भरने के लिए शिल्प में भी नए-नए प्रयोग हो रहे हैं । "शिल्प कोई निश्चित ढ़ांचा नहीं जिसमें विषय को फिट किया जा सके । नए विषय युगानुरूप नए शिल्प की मांग करते हैं । इसी कारण प्रत्येक युग में नई परिस्थिति में नये शिल्प रूप का जन्म होता है या प्रचलित रूपों में परिवर्तन और संशोधन होता है जिससे वे युग के समाज संबंधों तथा वस्तु सत्य को समग्र रूप से प्रतिबिंबित कर सके ।" [2]

1. नागेन्द्र, डा॰ (सं). *परिभाषिक कोष – साहित्य* खंड . पृ. 63.
2. सिंह, डा. त्रिवेणी. *हिन्दी परम्परा और प्रयोग*. पृ. 22.

5.2 औपन्यासिक शिल्प-पक्ष - शब्द, वाक्य, भाषा, प्रतीक एवं भाषा-शैली

उपन्यास शिल्प के बारे में कहा जाता है कि उपन्यासों में उपयुक्त शब्दों के प्रयोग से उपन्यास की भाषा सहज और बोध-गम्य हो जाती है । उपन्यासों की भाषा इसके अनुरूप नहीं होने से पाठकों की न तो उपन्यास के प्रति रूचि रह जाती है और न ही लेखक की भावना से कोई तादात्म्य । प्रेमचंद जैसे प्रसिद्ध उपन्यासकारों की लोकप्रियता का कारण उनके शब्दों का चयन एवं उनकी भाषा है, जो सामान्य लोगों की भाषा के काफी करीब है । चूँकि उपन्यासों में देशकाल और वातावरण का चित्रण होता है । इसमें रोचकता लाने के लिए वाक्यों के विभिन्न रूप, मुहावरे, कहावतें, अलंकारिक-शैली, पात्रानुकुल भाषाओं एवं प्रतीकों का प्रयोग होता है ।

हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकार मेहरुन्निसा परवेज और नासिरा शर्मा ने भी अपने उपन्यासों में विभिन्न परिवेश, देशकाल, पात्र आदि का वर्णन किया है । घटनाओं की अभिव्यक्ति के लिए लेखिकाओं ने विभिन्न शब्दों, वाक्यों, भाषा, प्रतीक एवं भाषा-शैली का प्रयोग किया है ।

उद्गम की दृष्टि से शब्द पाँच प्रकार के होते हैं- तत्सम, तद्भव, अर्धतत्सम, देशज और विदेशज । संस्कृत के ऐसे शब्द जिसे उसके मूल स्वरूप में ही प्रयुक्त किया जाता है, तत्सम कहलाते हैं; जैसे - अग्नि, देव, आश्रय आदि । ऐसे शब्द जो संस्कृत और प्राकृत से पूर्णतः विकृत हो गए हैं, तद्भव कहलाते हैं; जैसे - दाँत (दन्त), कान (कर्ण), गाँव (ग्राम) आदि । संस्कृत-प्राकृत के ऐसे शब्द जो अंशतः विकृत होकर तत्सम और तद्भव के बीच के हैं, अर्द्ध-तत्सम कहलाते हैं; जैसे- जनम (जन्म), धरम (धर्म), चूरन (चूर्ण) आदि । ऐसे शब्द जो संस्कृत से भिन्न अन्य भारतीय भाषाओं से सम्बन्ध रखते हैं, देशज

शब्द कहलाते हैं; जैसे- गंडा, बाप, लूगा आदि। विदेशज शब्द विभिन्न विदेशी भाषाओं के ऐसे शब्द हैं जो हिन्दी में प्रयुक्त किये जाते हैं; जैसे- स्कूल, अमीर, चाकू, पादरी आदि।

सार्थक शब्दों के ऐसे समूह जो वक्ता या लेखक का अभिप्राय साफ-साफ प्रकट करते हैं; वाक्य कहलाते हैं। रचना की दृष्टि से वाक्य तीन प्रकार के होते हैं - सरल वाक्य, मिश्र वाक्य और संयुक्त वाक्य। ऐसे वाक्य जिसमें एक ही क्रिया होती है, सरल वाक्य कहलाते हैं; जैसे- वह रोता है। जिस वाक्य में एक साधारण वाक्य के अतिरिक्त एक उपवाक्य भी होता है, मिश्र वाक्य कहलाता है; जैसे- यह वही स्थान है, जहाँ मैं दो वर्ष पहले आया था। जिस वाक्य में सरल या मिश्र वाक्य संयोजक या अव्यय के द्वारा जुड़े रहते हैं, संयुक्त वाक्य कहलाते हैं; जैसे - तुम पढ़ो या घूम लो।

भाषा शब्द की उत्पत्ति संस्कृति के 'भाष्' धातु से हुई है। भाषा के माध्यम से मनुष्य बोलकर, सुनकर, लिखकर या पढ़कर अपने मन के भावों या विचारों का आदान-प्रदान करता है। कहावतें, मुहावरे, लोकोक्तियाँ एवं अलंकारों के प्रयोग से भाषा अधिक प्रभावपूर्ण हो जाती है।

साहित्यिक रचनाओं में प्रतीक का विशेष महत्त्व है। यह रचनात्मकता को एक मूर्त रूप देता है। रचनाओं की प्रभावशीलता, उसकी अभिव्यक्ति, सक्षमता एवं गहनता में प्रतीक का व्यापक योगदान है। फ्रांस के प्रतीकवादी आन्दोलन से प्रभावित होकर १९वीं सदी के उत्तरार्ध में सर्वप्रथम इसका प्रयोग अंग्रेजी साहित्य में हुआ। www.hindi2dictionary.com के अनुसार प्रतीक का शाब्दिक अर्थ होता है - १. वह गोचर या दृश्य वस्तु जो किसी अगोचर या अदृश्य वस्तु के बहुत कुछ अनुरूप होने के कारण उसके गुण,

रूप आदि का परिचय कराने के लिए उसका प्रतिनिधित्व करती हो; २. चिन्ह, लक्षण, निशान । अंग्रेजी में इसका अर्थ होता है- Token, Symbol, Attribute, Sacrament, Emblem, Sign. हिन्दी साहित्य में इसके प्रयोग का श्रेय आचार्य रामचन्द्र शुक्ल को जाता है । एक साहित्यिक रचनाकार को सर्वप्रथम एक चित्रकार की भाँति कल्पना करना पड़ता है, क्योंकि किसी भी रचना से पहले वह अपने मानस पटल पर उस रचना को चित्रित करता है । उसके बाद ही उसे अपने शब्दों एवं वाक्यों के माध्यम से अभिव्यक्त करता है ।

जिस तरीके से लेखक अपनी भावनाओं और विचारों को व्यक्त करता है उसे शैली कहा जाता है । शैली का वास्तविक अर्थ ढ़ंग, तरीका, विचार प्रकट करने का ढ़ंग, वस्तु निर्माण का कलापूर्ण ढ़ंग आदि होता है । शैली शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के शील शब्द से हुई है जिसका अंग्रेजी रूपांतरण 'style' है । कोई भी रचनाकार कथानक, परिवेश एवं पात्र के अनुरूप भाषा-शैली का प्रयोग करता है, जिसमें कुछ इस प्रकार है - वर्णनात्मक-शैली, पत्रात्मक-शैली, नाट्य-शैली, यथार्थ-शैली, तर्क-वितर्क-शैली, आत्मकथात्मक-शैली आदि ।

5.2.1 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों का शिल्प-पक्ष :

हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकार मेहरून्निसा परवेज के उपन्यासों में शब्द, वाक्य, भाषा एवं प्रतीकों का चयन परिवेश एवं पात्रों के अनुरूप किया गया है । उचित भाषा-शैली के प्रयोग ने उपन्यासों की रोचकता को बरकरार रखा है ।

---

1. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र. *चिंतामणि, पहला भाग.* पृ. 162.

5.2.1.1 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में अंग्रेजी, संस्कृत / तत्सम, उर्दू एवं देशज शब्दों का प्रयोग

मेहरून्निसा परवेज के उपन्यासों में अंग्रेजी, संस्कृत / तत्सम, उर्दू एवं देशज शब्दों का प्रयोग किया गया है, जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं -

अंग्रेजी शब्द -

आँखों की दहलीज : स्कूल (पृ. 20), कार (पृ. 25), बिजनेस (पृ. 30), हस्बैंड (पृ. 51), पिक्चर (पृ. 56), प्रोग्राम (पृ. 57), डैम (पृ. 60) आदि ।

उसका घर : ऑफिस (पृ. 1), चैलेंज (पृ. 6), प्लीज, टेलर्स, बेकरी, मैडम (पृ. 8), गेस्ट (पृ. 9), एक्सीडेंट, हाफ पैंट (पृ. 10), क्रिश्चियन (पृ. 11) आदि ।

कोरजा : सिविल, लाइन, रोड, रिक्शा, गेट, पुलिस, आन्टी (पृ. 11), स्लीपर (पृ. 12), मेडिकल, रिप्रेजेंटेटिव, ट्यूब लाइट (पृ. 13), पिक्चर (पृ. 15) आदि ।

अकेला पलाश : ऑफिस, बटन, पेपर वेट (पृ. 9), ट्रांसफर (पृ. 10), डिपार्टमेंट, ड्यूटी, ड्राफ्ट (पृ. 11), स्टैंड, होटल (पृ. 13), क्वार्टर, कंपाउंड (पृ. 14) आदि ।

पासंग : सीट, नाइट, एक्सप्रेस, ट्रांसपोर्ट, हेडलाइट (पृ. 6), अपार्टमेंट, रजिस्ट्री (पृ. 7), रिक्शा, स्टैंड (पृ. 9), ट्रक, पुलिस (पृ.12), लोफर (पृ.25) आदि ।

समरांगण : मेजर, रोड, कंपनी, मिस्टर (पृ. 21), टिकिट (पृ. 32), मेस, कैश, काउंटर (पृ. 45), फुटबाल (पृ. 46), कोर्ट (पृ. 51), स्टॉमक (पृ. 68) आदि ।

संस्कृत शब्द :

उसका घर : निश्चय, वातावरण, मुद्रा, चेष्टा (पृ॰1), विस्मय, पति, भय, सम्बन्ध, लज्जित, भूमिका, पत्र (पृ॰2), निर्णय, अदृश्य (पृ॰3) आदि ।

कोरजा : प्रसन्नता (पृ॰11), परिचय, यात्रा, जन्म (पृ॰12), गृहस्थी (पृ॰13), वाक्य, ध्यान (पृ॰14), स्मृतियों (पृ॰16), वर्षों (पृ॰ 16), कंगन (पृ॰17) आदि ।

अकेला पलाश : धैर्य, दृढ़ता, पूर्ण, स्थिति, अक्षर, पत्र, सतर्क (पृ॰ 9), आवश्यकता (पृ॰ 9), विनोद, विपरीत, मीनाक्षी, शब्द (पृ॰ 10) आदि ।

पासंग : स्पर्श, शीतल, वर्षा, समाप्ति, मौन, यात्री, जल-प्रपात, यात्रा, विशाल, उत्तेजना, जिज्ञासा, विचित्र, स्मृति (पृ॰ 5) आदि ।

समरांगण : शुद्ध, प्रसिद्ध, पंडित, व्यक्ति, सुरक्षित, सत्य, परीक्षण, संकट, सामग्री, ईश्वर, प्राण, पत्नी (पृ॰ 10) आदि ।

उर्दू शब्द :

उसका घर : लिफाफा, तलाक (पृ॰ 2), मुर्दा, गश, अदालत (पृ॰ 3), जबर्दस्ती, अजीब (पृ॰ 5), आइंदा (पृ॰ 6), होश, दरख्वास्त (पृ॰ 7) आदि ।

कोरजा : मुबारक (पृ॰ 11), शलवार, एलान, सलाम, गरारे-कुरते, खुशबू (पृ॰ 12), खाला, एहसान, रफीक, अजीब, मोहब्बत, बेसब्री (पृ॰13) आदि ।

अकेला पलाश : एहसास, रूमाल, आदाब, लहजा (पृ॰ 9), कतई, तबाह, फायदा, अमल, तमाशा, तनख्वाह (पृ॰ 10), वफादार (पृ॰ 11), गैरजरूरी (पृ॰ 13) आदि ।

पासंग : गजल, मिसरे, खैर-खैरियत, तख्त, तश्वीह (पृ॰ 10), सरगोशियों (पृ॰ 11), एहसान, खानदान, हैसियत, मोहब्बत, दस्तर, खाकीना (पृ॰ 12) आदि ।

समरांगण : बेगमों, वाही-तबाही, कोहराम, नफासत, तहजीब, जाहिल, बेअदब, लिहाज-परदा, अदब-कायदा, कत्ल, बदहवास (पृ॰ 9) आदि ।

देशज शब्द :

उसका घर : भइया, दालान (पृ॰ 1), गठरी (पृ॰ 14), अल्हड़ (पृ॰ 19), भौंचक्की (पृ॰ 25), बौराई (पृ॰ 27), बाप रे (पृ॰ 32), ढ़ोर-चमार, चुड़ैलिनी (पृ॰33) आदि ।

कोरजा : चटपट (पृ॰ 11), ठोरी (पृ॰ 12), चिकसा (पृ॰ 13), सहराती, नटखट, ठिठोली, फल्लाँ (पृ॰ 14), बाप (पृ॰ 21), माटी, खटिया (पृ॰ 22) आदि ।

अकेला पलाश : बकती (पृ॰ 10), ढ़ीठ (पृ॰ 11), खपरैल(पृ॰ 12), खादी, छींट (पृ॰ 14), देहात (पृ॰ 16), बोरी, तिल्ली (पृ॰ 17), मचान (पृ॰ 19) आदि ।

पासंग : मर-खप, टोकना, मुरम (पृ॰ 9), टोल (पृ॰ 10), खलिहान, पायली (पृ॰ 206), चटोरी (पृ॰ 207), मिरगान, महरा, काछिन (पृ॰ 238) आदि ।

समरांगण : रसिया, नौटंकी (पृ॰ 95), गमछे (पृ॰ 97), तुरही, रबी (पृ॰ 98), कुल्हड़ (पृ॰ 101), चिल्हड़, एकन्नी, चवन्नी (पृ॰104), पुलिया (पृ॰ 105) आदि ।

5.2.1.2 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में प्रयुक्त सरल, संयुक्त एवं मिश्र वाक्य

मेहरून्निसा परवेज ने अपने सभी उपन्यासों में भाषा की रोचकता को बनाये रखने के लिए यथासंभव उपयुक्त स्थानों पर सरल, संयुक्त एवं मिश्र वाक्यों का प्रयोग किया है, जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं -

सरल वाक्य -

उसका घर - “रेशमा ने उठकर दरवाजा खोला ।” (पृ॰ 5), “रेशमा के डैडी हिन्दू

थे ।" (पृ॰ 11), "घर में वह कभी-कभार ही आता था ।" (पृ॰ 85), "जोसेफ सिर झुकाए खड़ा था ।" (पृ॰ 137), "ऐलमा बाहर आ गई ।" (पृ॰ 153) आदि ।

कोरजा - "जहूर मियाँ दरवाजे से बाहर हो गए ।" (पृ॰ 30), "खाला अम्मा को देखती रही ।" (पृ॰ 85), "दादा तख्त़ पर बैठ गए ।" (पृ॰ 41), "अम्मा और वह दोनों परेशान हो गए थे ।" (पृ॰ 43) आदि ।

संयुक्त वाक्य -

उसका घर - "ऐलमा सो नहीं रही थी, पर वह अभी रेशमा से मिलना नहीं चाहती थी ।" (पृ॰ 72), "उसकी कनपटी पर जोर से काँच की प्लेट लगी थी, और वह नन्हीं सी बच्ची तकलीफ से छटपटा रही थी ।" (पृ॰ 73) आदि ।

कोरजा - "उसे सामने देख दादी खिसकना चाह रही थी पर उसने जल्दी से पास जाकर पकड़ लिया ।" (पृ॰ 29), "आलमारियों में शीशे लगे थे और उसमें मोटी-मोटी पुस्तकें रखी थी ।" (पृ॰ 31) आदि ।

समरांगण- 'तुम तो बीमारी में सूख गई नहीं तो तुम जैसी सुन्दरी तो शहर भर में नहीं थी ।' (पृ॰१५६), 'सब कुछ नश्वर है तो तुमने दुनियाँ क्यों बनाई ।' (पृ॰ १७४) आदि ।

मिश्र वाक्य -

उसका घर - "उसकी समझ में नहीं आया कि आहूजा उस पर व्यंग्य कर रहा है या वाकई पूछ रहा है ।" (पृ॰ 53), "तुमने ऐनी को इसलिए तलाक दिलाया था ताकि उसकी सुन्दरता का सौदा तुम आफिसरों से करो ।" (पृ॰ 73) आदि ।

कोरजा - "जिस प्रश्न से दादी भाग रही थी वही प्रश्न सामने था ।" (पृ॰ 29), "रब्बो ताड़ गई थी कि हर बार जब वह उसके करीब पुलाव लेने जाती तब वह उसे बहुत गहरी नजरों से देखता है ।" (पृ॰ 63) आदि ।

समरांगण- 'नये कमिश्नर की जो नियुक्तियाँ हुई थी, उसे इसी दृष्टि को ध्यान में रखकर की गई थी ।', 'पंडित गोपीलाल जब नये कमिश्नर के बंगले पर भेंट करने पहुँचे तब गोपीलाल के बारे में उनकी क्षमताओं के बारे में सारी जानकारी नये कमिश्नर को मिल गई थी ।' (पृ॰ २३९) आदि ।

5.2.1.3 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में प्रयुक्त मुहावरें और कहावतें

मेहरून्निसा परवेज के उपन्यासों में मुहावरों और कहावतों का बहुलता से प्रयोग हुआ है, जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं -

उसका घर - आँखें मिलाना (पृ॰ 6, 115), फटी-फटी आँखों से देखना, चेहरा सफेद पड़ जाना (पृ॰ 3), आँखें झुकाना (पृ॰ 6), चेहरा तमतमाना (पृ॰ 7), बात आयी-गयी होना, मारा-मारा फिरना (पृ॰ 22), भैंस के आगे बीन बजाना (पृ॰ 106), पुरानी लकीरों को मिटाना (पृ॰ 114) आदि ।

कोरजा - शान बघारना, फन उठाना (पृ॰ 21), नाक में दम आना (पृ॰ 99), कलेजा मुँह को आना (पृ॰ 230) आदि ।

अकेला पलाश- शक का बीज पड़ना (पृ॰ 39), अड्डा जमाना, डबडबाई आँखों से देखना, लहु-लूहान होना, फूट-फूट कर रोना, आकाश छूना (पृ॰ 52), कई हाथ का फासला, काली करतूतें (पृ॰ 65), चेहरा सफेद पड़ना, खून निचोड़ लेना, दिल धक से होना (पृ॰ 150) आदि ।

पासंग- आँखें खोलना, रोब गाँठना, (पृ॰ 166), उल्टे पैर वापस लौटना, दम साधे बैठना, तमतमाये चेहरों से देखना, गणित लगाना (पृ॰ 167), खून का घूँट पीना (पृ॰ 278), दूर गुडासा दूरे पानी, नियर गुडासा नियरा पानी (पृ॰ 280) आदि ।

समरांगण - चेहरा सूखना (पृ॰ 15), सुहाग उजड़ना (पृ॰ 16), तलवार की नोक पर चलना (पृ॰ 19), ठगी-सी तकना (पृ॰ 20), हक्का-बक्का रहना, सुध-बुध खोना, अंग-अंग थिरकना, आसमान पर बैठाना (पृ॰ 82), तुरुप का इक्का, जादू चढ़ना (पृ॰ 83) आदि ।

5.2.1.4 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में प्रयुक्त प्रतीक

मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में पात्रों एवं उससे संबंधित घटनाओं के चित्रण में प्रतीकों का प्रयोग किया गया है, जैसे- "आज भेड़िये का रूप गणपत काका ने धरा है।सूने घर का फायदा उठाना चाहते हैं ।"[1], यहाँ 'भेड़िया' पाश्विकता का प्रतीक है।"इंसान को साधना साँप के साधने से क्या कम है ।"[2], यह मनुष्य की अवसरवादिता एवं खतरनाक प्रवृति का प्रतीक है।"मैडम, यह हरिजन है, इसके हाथ का छुआ हमलोग कैसे खा सकते हैं ।"[3], यह सामाजिक असमानता एवं वर्ण व्यवस्था का प्रतीक है । "रात को अस्पताल में बाहर से इनके दोस्त आते हैं, जो नर्सों से अपनी भूख मिटाते हैं ।"[4], यह सरकारी संस्थानों में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं शोषण का प्रतीक है । "बात करते हैं तो हमेशा 'तेरी लड़की, तेरे बच्चे' सम्बोधन से, जैसे आसमान से सीधे माँ के पेट में आ टपके हो ।"[5], यह पिता की हृदय हीनता, भाव शून्यता एवं गैर जिम्मेवारी का प्रतीक है ।

1. परवेज, मे॰ पासंग. पृ. 306.
2. परवेज, मे॰ पासंग. पृ. 338.
3. परवेज, मे॰ अकेला पलाश. पृ. 59.
4. परवेज, मे॰ अकेला पलाश. पृ. 71.
5. परवेज, मे॰ कोरजा. पृ. 20.

"मैं कोई भागकर आई हुई लौंडिया नहीं हूँ, चार के सामने ब्याह कर आई हूँ । क्यों जाऊं अपने बाप के घर ?"[1], यह स्त्री के अस्मिता और उसके अधिकारों का प्रतीक है । "आया था एक सिकन्दर बादशाह, दुनियाँ से ले लेकर क्या गया? दोनों हाथ खाली, कफन से निकले हुए ।"[2], यह संसार की नश्वरता का प्रतीक है । "अब मैं सोचता हूँ कि हमारे मोहल्ले के कुत्ते दो-तीन महीने से दिन और रात क्यों रोते थे ?"[3], यह अशुभ घटना की आशंका का प्रतीक है । "यहाँ बूढ़े-बूढ़े राज्य कर रहे थे, कमसिन बेगमें और रानियाँ रखते थे ।"[4], यह राजाओं की विलासिता का प्रतीक है ।

5.2.1.5 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में प्रयुक्त पात्रानुकूल भाषा-शैली

मेहरून्निसा परवेज के उपन्यासों में ग्रामीण एवं शहरी, शिक्षित, अर्द्ध-शिक्षित एवं अशिक्षित पात्रों द्वारा उनके परिवेश के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया गया है, जिनमें से कुछ निम्न लिखित है -

समरांगण- "अले आइए वैद्य जी, तैसे है? बले दिनों बाद आए ?"

"ताऊ जी, वैद्यजी बाहर चले गए थे, अचानक रास्ते में दिख गए । सुना है अंग्रेजों के बीच आजकल दवा बनाकर बेच रहे हैं । आप भी कुछ ताकत की दवा बनवा लो।" "अत्था-अत्था अब त्या ताकत की दवा थाएं ।" सेठजी शरमा कर बोले । (पृ॰ १३६) आदि ।

5.2.1.6 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में प्रयुक्त अलंकारिक-शैली

मेहरून्निसा परवेज के उपन्यासों के लेखन-शैली में स्वभाविक रूप से अलंकारों का समावेश हुआ है, जिनमें से कुछ निम्न लिखित है -

---

1. परवेज, मे॰ *कोरजा.* पृ. 23.
2. परवेज, मे॰ *कोरजा.* पृ. 98.
3. परवेज, मे॰ *समरांगण.* पृ. 175.
4. परवेज, मे॰ *समरांगण.* पृ. 242.

उपमा अलंकार -

उसका घर- "अब वह बच्चों की तरह रो पड़ेगी ।" (पृ॰ 25) "भाभी की आँखें बिल्ली के समान सतर्क थी ।" (पृ॰ 112) आदि ।

कोरजा - "नसीमा की आँखें फूटे नाले-सी बह रही थी ।" (पृ॰ 32), "आसमान पर ढ़ेर सारे तारे ऐसे चमक रहे थे जैसे किसी शैतान बच्चे ने ढ़ेर सारी अफशाँ को फर्श पर बिखेर दिया हो ।" (पृ॰ 223) आदि ।

अकेला पलाश - "सपने इतनी जल्दी झूठे हो जाते हैं, मैनें नहीं जाना था, बिल्कुल सेई के काँटे की तरह जो देखने में निहायत खूबसूरत हसीन होते हैं पर जब चुभते हैं, तो उसका जहर नहीं निकलता, वह अन्दर ही अन्दर घाव को पका देता है, सड़ा देता है और एक दिन रोगी की मृत्यु हो जाती है ।" (पृ॰ 171), "पर मैं तुम्हें बताऊँ तहमीना, प्यार एक ऐसा पौधा है जो जिन्दगी की कड़ी धूप में कुम्हला जाता है ।" (पृ॰ 172) आदि ।

समरांगण- 'मोहन की गोद में एक सुन्दर, गोल-मटोल, रूई की तरह कोमल नन्हा शिशु था जो टकटकी लगाकर मोहन को देख रहा था ।' (पृ॰ १५२) आदि ।

अनुप्रास अलंकार -

उसका घर- "उसने डरते-डरते दरवाजा खोला ।" (पृ॰ 30), "रेशमा की बेटी मुँह से थूक उगल-उगल कर हूँह-हूँह करके हाथ-पैर मार रही थी ।" (पृ॰ 34), "वह गंदी-गंदी गालियों के साथ शब्द उगल रही थी ।" (पृ॰ 34), "अपने आप को बंधन में बांध लिया ।" (पृ॰ 38) आदि ।

कोरजा - “दो-चार रंग-बिरंगी लंबी-चोंच वाली चिड़िया आ बैठी थी ।” (पृ॰ 24) “कौन किस काम से आया, कोयले का कावड़ कितना बढ़ा, कितना घटा ।” (पृ॰ 26) आदि ।

अकेला पलाश - “मन तो मैडम एक ढ़ीठ बच्चे की तरह होता है, जो कभी नहीं मानता, उसे मार-मार कर लाइन पर लाना होता है ।” (पृ॰ 66) तहमीना का मुँह कान तक लाल हो उठा और वह मुँह पर हाथ रखकर हँस दी । (पृ॰ 89) आदि ।

उत्प्रेक्षा अलंकार -

उसका घर -“वह खोयी-खोयी ऐसी बैठी थी मानो भईया जो कहेंगे वही मान लेगी ।” (पृ॰ 3), “उसे सब किसी उपन्यास में पढ़े दृश्य-सा लग रहा था ।” (पृ॰ 25), “वह भौंचक्की-सी बैठी शून्य में ताक रही थी ।” (पृ॰ 41), “निस्तब्धता खुद बौरायी-सी मंडरा रही थी ।” (पृ॰ 41) आदि ।

कोरजा - “फातमा यानि अम्मा गुस्से में पागल हुई मानो बिफरी शेरनी-सी घूम रही थी ।” (पृ॰ 23), “दादी जिन्दा लाश-सी पड़ी थी ।” (पृ॰ 34), “उस रात वह चुपचाप सहमा-सा आया और अम्मा के बाजू में लेट गया ।” (पृ॰ 36) आदि ।

अकेला पलाश - “खरगोश भी अपनी प्यारी-प्यारी गोल-गोल आँखों से घूर रहा था, मानो पूछ रहा हो कि यह अजनबी कौन है ?” (पृ॰ 89) आदि ।

पुनरुक्ति अलंकार -

कोरजा - “सारा शरीर दो बच्चे जनते उल्टी थैली सा खाली-खाली लटक आया था ।” (पृ॰ 22), “टूटी दीवारों पर हरी-हरी घास उग आई थी ।” (पृ॰ 26) आदि ।

अकेला पलाश- "खरगोश भी अपनी प्यारी-प्यारी गोल-गोल आँखों से घूर रहा था ।" (पृ॰ 89), "ताजा-ताजा पका हुआ महुआ दूर से मोती के बड़े दाने-सा दिख रहा था ।" (पृ॰ 206) आदि ।

समरांगण- "बहुत-बहुत धन्यवाद बंगाली सिंह जी ।" (पृ॰ १५४) आदि ।

5.2.1.7 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में प्रयुक्त वर्णनात्मक-शैली

इस शैली में किसी घटना, तथ्य, दृश्य, वस्तु, स्थान आदि का वर्णन रहता है जिससे वह दृश्य साकार हो जाता है । मेहरून्निसा परवेज के उपन्यासों के लेखन-शैली में स्वभाविक रूप से वर्णनात्मक-शैली का समावेश हुआ है, जिनमें से कुछ निम्न लिखित है -

उसका घर - "सड़कों पर ग्रामीण औरतें सिर पर टोकने में चावल लिए बेचती दिख जाती थी । ये आदिवासी औरतें टोकनों में तरह-तरह के चावल लेकर जगदलपुर की सड़कों पर बेचती धूमती है । ये लोग अभी भी लोहे की पतली चद्दर से बनी पायली, सोली में चावल आदि बेचती है ।" (पृ॰ 102), "ठंढ़ बढ़ गई थी । शाम से सिहरा देने वाली ठंढ़ पर रही थी । हवा भी काफी चल रही थी । अब आतिशदान में जोसेफ कोयला जला देता था ।" (पृ॰ 103) आदि ।

समरांगण- "गोपीलाल ने पहली बार जीवन में छावनी देखी थी । अंग्रेजों की छावनी का नजारा तो पहली बार ही देख रहे थे । ऐसा अद्भुत वातावरण उन्होंने कभी नहीं देखा था । तरह-तरह के फूलों से क्यारियाँ सजी थी । सड़क इतनी साफ-सुथरी कि उसमें एक तिनका भी ढूँढ़ने नहीं मिल सकता था । अंग्रेज अफसरों के शानदार बंगलों की कतारें थी । जगह-जगह सैनिक अरबी घोड़ों पर गश्त लगाते घूम रहे थे । सड़क के दोनों छोरों पर कतार से वृक्ष थे । भव्यता और शालीनता का वातावरण था । मजबूत चौड़ी कद-गठन के सैनिक थे । उनके

सफेद रंगत पर लालकोट और सफेद पैंट, सर पर सफेद हैट सजता था ।" (पृ॰ ४७) आदि ।

5.2.1.8 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में प्रयुक्त पत्रात्मक-शैली

मेहरून्निसा परवेज के उपन्यासों के लेखन-शैली में परिस्थितियों के अनुरूप पत्रात्मक-शैली का प्रयोग किया गया है जिसके कारण पात्रों के वे मनोभाव मुखरित हुए हैं जिन्हें वे शायद प्रत्यक्ष रूप से व्यक्त करने में असमर्थ रहे हों, जिनमें से कुछ निम्न लिखित है -

उसका घर - "डैनी, मैं लड़ाई में मारा गया तो तुमसे उम्मीद करता हूँ कि मेरी बच्ची का नाम रेशमा ही रखोगी, जो मुझे पसंद है, और इसी नाम से उसे स्कूल में दाखिल करवाओगी, बस मैं इतना ही चाहता हूँ । बाकी तुम्हारी शर्त भी याद है कि बच्चे क्रिश्चियन धर्म अपनायेंगे । खैर इसमें मुझे कुछ नहीं कहना है, प्रार्थना शब्द अलग-अलग है पर अर्थ एक है ।" (पृ॰ 13)

"दीदी मैं देव के पास जा रही हूँ । दोनों समय के भोजन पर मेरा इंतजार न करना ।

तुम्हारी

रेशमा" (पृ॰ 55) आदि ।

अकेला पलाश- "तहमीना, मैं तुम्हारे शहर में आ रहा हूँ...... मिल सकोगी ?" (पृ॰ 09) आदि ।

5.2.1.9 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में प्रयुक्त नाट्य-शैली

मेहरून्निसा परवेज के उपन्यासों में नाट्य-शैली का प्रयोग किया गया है जिसमें नाटकीयता, भावात्मक वार्तालाप, उपयुक्त टिप्पणियाँ एवं अधूरे

वाक्यों के द्वारा पात्रों के मनोभावों की अभिव्यक्ति हुई है, जिनमें से कुछ निम्नलिखित है -

उसका घर - "दीदी तुम्हारे हाथों में क्या है ?"

"गहने है, रेशमा ।"

रेशमा चौंक पड़ी, वह तुरन्त समझ गई कि दीदी उसे गहने देने आई है ।

"आओ रेशमा तुम्हें गहने पहना दूँ ।"

"दीदी !" रेशमा कहकर पीछे हटी ।

ऐलमा ने रेशमा के हाथ को पकड़कर अपनी ओर खींचा, "पगली, मायके से दुल्हन ऐसे विदा होती है ?"

"नहीं दीदी, मैं ऐसे ही ठीक हूँ ।"

"चुप, शुभ काम के समय अपशकुन कैसा ?"

"अपशकुन कहाँ ?"

"तेरा इस तरह जाना क्या अपशकुन नहीं है ? आज आन्टी होती तो अपनी बेटी को ऐसे ही विदा करती ?" ऐलमा ने जबर्दस्ती सारे गहने रेशमा को पहना दिए । (पृ॰ 163) आदि ।

समरांगण- "क्या हुआ, ऐसे कहाँ से भागे आ रहे हो बद्री ?"

"बहूरानी, बड़ी बुरी खबर सुनकर आ रहा हूँ ।"

"क्या ?" पृथा सहम सी गई ।

"डाक्टर नजीर अहमद को पुलिस की गोली लग गई ।"

"क्या कहते हो ?" पृथा लगभग चीख सी पड़ी । (पृ॰ 163) आदि ।

5.2.1.11 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में प्रयुक्त आत्मकथात्मक-शैली

आत्मकथात्मक-शैली में रचनाकार प्रथम पुरूष 'मैं' के द्वारा किसी भी घटना या कार्य का वर्णन करता है । मेहरून्निसा परवेज के उपन्यासों में इस शैली के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है -

अकेला पलाश- "मेरा झुकाव बचपन से ही धर्म की ओर था। धीरे-धीरे यह बढ़ता गया और एक दिन मैंने सन्यास लेते हुए घर छोड़ दिया ।" (पृ॰ ६३), "भूखे प्यासे मुझे चार दिन रखा गया और फिर उसी रात दस व्यक्तियों ने मेरे साथ बलात्कार किया । दुख, पीड़ा और शोक से मेरी आत्मा त्राहि-त्राहि करने लगी, पर वहाँ से निकलने का कोई रास्ता नजर नहीं आया । मेरी दोस्त ने जब देखा कि मैं इस वातावरण में नहीं जी सकूंगी तो उसने एक दिन मौका पाते ही मुझे आश्रम से बाहर कर दिया ।" (पृ॰ ६३) आदि ।

5.2.1.12 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में प्रयुक्त विश्लेषणात्मक-शैली

इस शैली में बुद्धि की प्रधानता एवं विचारों की प्रधानता रहती है । मेहरून्निसा परवेज के उपन्यासों के लेखन-शैली में यथास्थान विश्लेषणात्मक-शैली का समावेश हुआ है, जैसे -

उसका घर- "भइया ने पहले भी उसे देखा था पर भाभी ने पहली बार देव को देखा । भाभी देव के सुन्दर लंबे शरीर को घूर रही थी, उनकी आँखों से ही ऐलमा ताड़ गई कि रेशमा की पसंद को उन्होंने सराहा है ।" (पृ॰ 139) आदि ।

कोरजा - "हाँ, एकदम सही कहा अमित तुमने । आदमी जितना तरक्की कर रहा है, जितना पढ़-लिख रहा है, जितनी उसमें सोचने-समझने की ताकत आ रही है, उतना ही वह अकेला होता जा रहा है ।" (पृ॰ १०७) आदि ।

समरांगण- "बंधन कोई लादता थोड़े ही है वह तो हम खुद ही बँधा हुआ महसूस करते हैं । अब देखो एक नये बछड़े को जब हम पकड़ते हैं तो वह कैसे छूट-छूट कर भागता है ।खुले मैदान या जंगल में तो दस व्यक्ति भी उस बछड़े को पकड़ नहीं पाते हैं, परन्तु जब वह बड़ा हो जाता है, और जब बैलगाड़ी में जोता जाता है, तो उसे अपने कर्तव्य का बोध हो जाता है ।अब वह यही काम करता है ।" (पृ॰ २०७) आदि ।

5.2.1.13 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में प्रयुक्त व्यंगात्मक-शैली

इस शैली में व्यंग्य की प्रधानता रहती है, जैसे-

कोरजा- "नानी झपाटे से कहाँ जा रही हो ? कब्रिस्तान का रास्ता तो उधर है ?"
"हम क्यों जायें ? कब्रिस्तान जायें हमें भेजने वाले ।" (पृ॰ ६३),
मुझसे कहते हैं, 'अरे ! तुम कब्रिस्तान नहीं गई जी नानी, वहाँ दो दिन से तुम्हारी कब्र खुदी पड़ी है । अल्लाह मियाँ के यहाँ कब जा रही हो ? हमने फोन कर दिए हैं, तुम्हारे लिए डोला आने वाला है ।' (पृ॰ ६३) आदि ।
समरांगण- "यह तो बड़ी बढ़िया बात सुझाई, तो आप पता करना ?"
"ठीक है, आदमी लगा देंगे । गोपीलाल मिठाईवाले से गोपीलाल जमींदार बन जाओगे ।" बंगाली सिंह ने मजाक किया ।(पृ॰ २०७) आदि ।

5.2.1.14 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में प्रयुक्त भावात्मक-शैली

इस शैली में बुद्धि तत्व की अपेक्षा भाव तत्व की प्रधानता रहती है जिसका संबंध हृदय से रहता है ।मेहरून्निसा परवेज के उपन्यासों के लेखन-शैली में यथास्थान भावात्मक-शैली का समावेश हुआ है, जैसे -
कोरजा - "नानी अवाक सी रह गई । इतनी छोटी-सी उम्र से कमाने का एहसास ? या अल्लाह क्या वक्त आ गया है, खेल-कूद की उम्र में पैसा पैदा

करने की सोच इन बच्चों पर आन पड़ी थी । क्या अब और आगे जमाने में माँ के पेट से बच्चा निकलते ही अपने पेट के लिए कमाने निकल पड़ेगा ? जैसे जानवर के, मुर्गी के बच्चे करते हैं । क्या अब इंसान और जानवर में फर्क नहीं रहेगा ?" (पृ॰ २०६), "कितना अजीब है, मौत ने दोनों को कितना दूर कर दिया ! एक की कब्र शहर के एक छोड़ पर है, दूसरे की राख नदी में बह गई ! कितने फासले पर हो गए दोनों ! हिन्दुओं को जलानेवाली जगह कितनी दूर है ! पता नहीं भगवान के यहाँ मिल भी पाए या नहीं !" मोना दीदी ने उदासी से भरकर कहा, "कम्मो की कब्र को एकबार देखने की इच्छा होती है, पर मुसलमानों के कब्रिस्तान पर औरतें नहीं जा सकती न ?" (पृ॰ २२७) आदि ।

समरांगण- "बंगाली सिंह जी आपके लिए वह केवल सोने के कंगन थे, परन्तु मेरे लिए तो वह पुरखों की विरासत थी । मैंने जन्म लेते ही आँख खोलने पर सबसे पहले वही कंगन देखे थे । माँ की गोद में मैं माँ के हाथों के कंगन से खेलता था । मुझे वह कंगन बहुत पसंद थे ।" (पृ॰ २२७) आदि ।

5.2.1.15 मेहरून्निसा परवेज के उपन्यासों में प्रयुक्त यथार्थ-शैली

इस शैली में जीवन की वास्तविक घटनाओं एवं स्थितियों का उसी रूप में निरूपण रहता है, जैसे-

कोरजा- "बच्चे दाने-दाने को तरस रहे थे । नुक्कड़वाले बनिए का कर्ज अलग चढ़ रहा था । छोटे-मोटे कर्जदारों को गाय-भैंस बेचकर चुप करा दिया गया था । बच्चों के मुँह से दूध छुड़ा कर बकरियों का दूध बिकने जाने लगा था । पुरानी बातें, पुराना वक्त सब सपना बनकर आँखों की कोर में समा गया ।" (पृ॰ ९४) आदि ।

अकेला पलाश- "देखो, उम्र से कोई बड़ा नहीं होता, अपने पद से बड़ा होता है । तुम सहायिका हो याने तुम शिक्षिका के अण्डर में हो, याने वह यहाँ पर तुम्हारी

बॉस है, और उसकी बात तुम्हें माननी पड़ेगी, और इस तरह नौकरी में मतभेद या क्लेश पैदा करके कोई फायदा नहीं ।" (पृ॰ ५८) आदि ।

5.2.2 नासिरा शर्मा के उपन्यासों का शिल्प-पक्ष

हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकार नासिरा शर्मा ने अपने सभी उपन्यासों में शब्द, वाक्य, भाषा, प्रतीक एवं बिम्ब का चयन उसके परिवेश एवं पात्रों के अनुरूप किया है । उचित भाषा-शैली के प्रयोग ने उपन्यासों की रोचकता एवं उत्कृष्टता को बरकरार रखा है ।

5.2.2.1 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू एवं देशज शब्दों का प्रयोग

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में अंग्रेजी, संस्कृत, अरबी- फारसी एवं देशज शब्दों का बहुलता से प्रयोग किया गया है, जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं -

अंग्रेजी शब्द

सात नदियां : एक समंदर – शेड, लिपस्टिक, टॉप, गेटअप, कार (पृ॰ २३), स्टुडियो, पैकेट, पर्स (पृ॰ २४), सिगरेट, स्मार्ट, स्लैक्स, फ्राक, स्कर्ट, मेकअप (पृ॰१०३) आदि ।

शाल्मली – इन्टर, नेशनल, जरनल (पृ॰ १३२), प्लाई, प्वाइंटस, सेशन (पृ॰ १३३), ट्रांसफर, रिटायरमेंट, पासपोर्ट, ऑफिस, हनीमून (पृ॰ १३४), इंजेक्शन, विंडो शॉपिंग (पृ॰ १३५), गेट टूगैदर, टैक्सी, हॉस्टल (पृ॰ १३९), मैडम, कोटेशन (पृ॰ १५८) आदि ।

ठीकरे की मंगनी – डॉक्टर, टीचर, टॉफी (पृ. १४६), कैसेट, कॉफी (पृ. १४७), पैकेट, वण्डरफुल, स्कूल, होमसाइंस (पृ. १४८) आदि ।

अक्षयवट – म्यूजियम, स्कूल, क्लास, ऑफिसर, पोस्ट, कॉलेज (पृ.४३) आदि ।

कुंइयाजान – डॉक्टर, न्यूरोसर्जन, स्पेशलिस्ट, डेंटिस्ट, प्राइवेट, नर्सिंग होम, को-ऑपरेटिव, बेसिस, शैंपेन, वाइन, फंड, कैंसर (पृ॰ १७०) आदि ।

जीरो रोड – चेक इन, सर, मिडिल इस्ट (पृ॰ ७५), मोबाइल, रिस्ट वाच, बेसमेंट, आउट ऑफ कवरेज (पृ॰ ७७), फाइल (पृ॰ ७८), गर्ल फ्रेंड (पृ॰ २३८) आदि ।

पारिजात – आब्जेक्शन, वर्ल्ड एकॉनमी, सेकेंड वर्ल्ड वार (पृ. १७), होटल, ट्रेन, कुली, थर्मस, कॉफी, कंपनी, ज्वाइन (पृ. १८) आदि ।

कागज की नाव – पोर्टिको (पृ॰ ८४), रजिस्टर, होमवर्क (पृ॰ ८६), रिटायर, डायरी, क्लास, रिंग (पृ॰ ८७), फोन, डिप्टी कलेक्टर (पृ॰ ८८) आदि ।

अज़नबी ज़जीरा – स्पेलिंग, गेम, जज (पृ॰ ४४), फ्लैट, फैशनबिल, पुलिस (पृ॰ ४५), मेन रोड, मार्च, मार्क (पृ॰ ५३), वैन, अफसर (पृ॰ ५४) आदि ।

संस्कृत शब्द -

अक्षयवट – भविष्य, शिक्षा, विश्वास, आत्महत्या, भूत, प्रस्ताव (पृ॰ ४६) आदि ।

कुंइयाजान – पौष्टिक, गरिष्ठ, अहिंसा (पृ॰ १७०), गुण, कर्त्तव्य (पृ॰ १७१), कटाक्ष, संघर्ष, चतुर, शोषक, भव्यता, वर्ग, विश्व-स्तर (पृ॰ १७२) आदि ।

जीरो रोड – कुम्भ, विवेक, तर्क, श्रद्‌धा, स्नान, संतोष, मुक्त (पृ॰ ७३) आदि ।

पारिजात – सामग्री, कंपन, वात्सल्य, प्रवाह, मित्रता, उच्चारण, कटाक्ष (पृ.१२), बौद्‌धिक, श्रोता (पृ. १३), भ्रमण, ज्ञान (पृ. १५), धैर्य, ऋषि (पृ. २८९) आदि ।

अरबी-फारसी शब्द -

ठीकरे की मंगनी - दर-हम-बरहम, अल्लाह, तोहमत, ज़लजले (पृ. ६०), तख्त, गुजर, गम, हलक, बालिस्त-भर, मुबतला (पृ. १२२) आदि ।

अक्षयवट – हुनर, इम्तहान, ख्वाब, सोहबत, बदनसीबी, अहसास (पृ॰ ४७) आदि ।

जीरो रोड – लिहाफ (पृ॰ ७३), खत, इजाजत (पृ॰ ७७), तहजीब (पृ॰ १३३) आदि ।

कागज की नाव – वाकया, शख्स, जुर्म, मजबूर, ताज्जुब, तकाजा (पृ॰ ८१), कदमबोशी, शरीक, मुतमईन, खुलुश (पृ॰ ८३) आदि ।

अज़नबी ज़जीरा – गरगाज, लजीज (पृ॰ ४६), सुब्हान अल्लाह, मुआयना, अजीज, शौहर (पृ॰ ४७), कालीन, तिजारत, हुनर, फैसलाकुन (पृ॰ ४८) आदि ।

देशज शब्द -

अक्षयवट – खुड़पेंच, हरकतिया, मालिन, बिटिया (पृ॰ ४९) आदि ।

कुंइयाजान – चूरन, नेबू (पृ॰ ४९), चहकार (पृ॰ १७०), सुआरथ (पृ॰ १९२), लच्छन (पृ॰ १९२), ब्याही, बहिनी (पृ॰ १९३) आदि ।

जीरो रोड – सोहाग, बिच्छिया, नहान (पृ॰ ७३), चुन्ना, कुल्हड़ (पृ॰ १५५), आदि ।

पारिजात – रतौंधी (पृ. १४५), गुजरिया, ब्याह, गुइयाँ, पोतबहू (पृ.१४६) आदि ।

5.2.2.2 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त सरल, संयुक्त एवं मिश्र वाक्य

सरल वाक्य -

सात नदियां : एक समंदर – 'मैं सो गई थी ।' (पृ॰ २५), 'गर्मी गजब की थी ।', 'तय्यबा, सूसन, परी एक कार में थी ।' (पृ॰ ५०) आदि ।

जीरो रोड- 'लो पानी पीयो ।' (पृ. ७३) आदि ।

कुंइयाजान - 'घबराने की बात नहीं है ।' (पृ. २१), 'सुबह का वक्त था ।', 'डॉ. साहब आए हैं ।' (पृ. ३७), 'मुझे अभी शादी नहीं करनी ।' (पृ. ६७) आदि ।

अजनबी जजीरा- 'लड़कियाँ सहमी खड़ी थी ।' (पृ. १८), 'समीरा की सांसें तेज हो गई ।', 'आँखों में खौफ उतर आया ।', 'नींद कोसों दूर चली गई ।' (पृ. ५७) आदि ।

कागज की नाव- 'अब मैं घर जा रही हूँ ।' (पृ. १९), 'उसने करवट बदली ।' (पृ. ३३), 'जहूर मियाँ धीरे-धीरे दाने घुमाने लगे ।' (पृ. ४४) आदि ।

पारिजात- 'सूरज अभी डूबा नहीं था ।' (पृ. २३८), 'दोनों खामोशी से चाय पीते रहे ।' (पृ. २५२), 'रोहन ने अपना जुर्म खुद कबूला है ।' (पृ. २९७) आदि ।

संयुक्त वाक्य-

सात नदियां : एक समंदर– "मगर यह बाजार, यह जगह, यह इमारत, सब कुछ ईरानी है, फिर मुझे इजाजत क्यों नहीं मिलेगी ?" (पृ. १६९), "आगे बढ़कर उसने लोहे की डोलची उठाई और भीड़ के पीछे खरीददारी के लिए चल पड़ी ।" (पृ.१७०) आदि ।

ठीकरे की मंगनी- 'उसने करवट बदलीं और दिवान-ए-फ़ैज उठाया ।' (पृ. ४८), कमरे में जाकर उसने बिस्तर झाड़ा, किताबें समेटी और लाइट बुझाकर लेट गई ।' (पृ. ६७) आदि ।

जीरो रोड- 'कुत्ते ने सिर निकाला, फिर भय से वह पीछे दुबक गया ।' (पृ. २९४), 'हमारे देखते-देखते ईरान बर्बाद हुआ फिर अफगानिस्तान और अब इराक ।' (पृ. ३९९) आदि ।

अक्षयवट- 'सिपतुन की चाय ठंढ़ी हो गई लेकिन पूरे अखबार में मुनिया की मौत पर दो पंक्तियाँ भी नहीं छपी थी ।' (पृ. ११८) आदि ।

पारिजात - "उसे भूख लग रही थी, मगर खाने का मन नहीं था ।" (पृ. ३९८), "यहाँ तक कि बेटे के भविष्य को भी ध्यान नहीं रखा, फिर बाप होकर क्यों तिल-तिल कर घुटता रहता हूँ ।" (पृ. ३९९) आदि ।

कागज की नाव- "ससुर और बेटा नौकरी पर बहाल हो गए और दोबारा काम पर जाने लगे ।" (पृ॰५६), "रोज तो कहीं डिनर पर जाना होता है और नाश्ता दोपहर के खाने के वक्त होता है ।" (पृ॰९७), "उन्होंने प्यार से बीबी का सिर सहलाया और सोचा - पूरे तीस साल इस औरत के साथ मैंने गुजार दिए ।" (पृ॰१२३) आदि ।

अजनबी जजीरा - "एकाएक तेज धमाका हुआ और फिर उसे कुछ याद नहीं रहा ।" (पृ॰१०१) आदि ।

मिश्र वाक्य -

सात नदियां : एक समंदर –

"कानून है इस स्टोर का कि जिन्दा ईरानी नहीं जा सकते हैं ।" (पृ॰ १६९), "उसे सिर्फ इतना अहसास था कि वह स्ट्रेचर पर लाद कर कहीं ले जायी जा रही है ।" (पृ॰ २३५) आदि ।

शाल्मली- "मैं जानता तो यहाँ न ब्याहता तुझे, शालू, बड़ों ने ठीक ही कहा कि घर-परिवार को ठोक-बजाने के बाद लड़के का कुल भी महत्त्वपूर्ण होता है ।" (पृ॰४६) आदि ।

ठीकरे की मंगनी- 'रेशमा भी जब गर्भवती हुई थी, तो कितनी खुबसूरत हो गई थी ।', 'रेशमा भी शादी के बाद ऐसी खिली थी कि उसके चेहरे से नजरें ही नहीं हटती थी ।' (पृ॰ ६७) आदि ।

कुंइयाँजान- 'जिसके पास जो था वह उसके कटोरे में डाल रहा था ।' (पृ॰ ८१), 'स्कूल जाते बच्चों के सामने शीशा जो एकदम तड़ाक की आवाज के साथ गिरा तो वे अचकचा के उछल पड़े ।' (पृ॰ ८१) आदि ।

जीरो रोड- 'उनका सारा बदन इस भय से कांपता रहता कि कहीं किसी दिन अनहोनी न हो जाए ।' (पृ॰ ६८) आदि ।

पारिजात- 'जब नई दुल्हन इस बँगले में कदम रखेगी तो सब कुछ पाक-पवित्र हो जाएगा ।', 'अक्सर याद आता था कि प्रभा यहाँ अकेली होगी ।' (पृ. ४९६) आदि ।

कागज की नाव - "कई बार दिल किया कि गोलू को आवाज दें फिर महलका के कड़वे लहजे के डर से दिल मसोस कर रह गए ।" (पृ॰ १३), रमजान को जब पता चला कि लाला राम प्रसाद की लड़की जूही अपने कॉलेज के पीछे उससे मिलना चाहती है तो उसे दाल में कुछ काला लगा ।", (पृ॰ ८९) आदि ।

अजनबी जजीरा- "जब तक वह दरवाजे पर पहुँचती तब तक घंटी बजाने वाले ने ऊँगली बटन पर रख हटाना मुनासिब नहीं समझा ।" (पृ॰ ११), जिस समाज में जवान माँ पर नजरें गड़ी हों वहाँ पर कमसिन लड़कियों की क्या सुरक्षा है ?" (पृ॰५२) आदि ।

5.2.2.3 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त मुहावरें और कहावतें

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त कुछ मुहावरें और कहावतें निम्नलिखित हैं -

सात नदियां : एक समंदर – कान की लवें गरम होना (पृ॰ १८), गुल खिलना, दिल हथेली पर रखना, माला जपना (पृ॰ १९), नजर उठाना, दूध से धुला (पृ॰ २०), दूध का जला छाछ फूँक-फूँक कर पीना (पृ.५८) आदि ।

शाल्मली – तलवार की धार पर चलना, जहर का घूँट पीना, जान छिड़कना (पृ. ६०), बाल की खाल निकालना (पृ. ७६), बुढ़ापे की लाठी (पृ॰ ११२) आदि ।

ठीकरे की मंगनी - 'चेहरा सफेद पड़ना' (पृ॰ ४९), अंगारों पर लोटना (पृ॰ ११२), दो नावों की सवारी करना (पृ॰१३०), 'सावन हरे न भादौ सूखे' (पृ॰ २३३) आदि ।

जिन्दा मुहावरे – सावन के अन्धे को सब कुछ हरा-हरा दिखता है (पृ. १२), धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का (पृ. २२), कलेजा मुँह को आना (पृ. २९), छुछुन्दर के सिर में चमेली का तेल (पृ. ४६) आदि ।

अक्षयवट – खाल उतार कर भूसा भर देना (पृ. ६०), मन खट्टा होना (पृ. ६३), दिल पर पत्थर रखना, तू-तू - मैं-मैं, जान बची तो लाखो पाये (पृ. ६४) आदि ।

कुंइयाजान – बाप बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रुपैया (पृ. २३), चेहरा काला पड़ना, रंगे हाथों पकड़े जाना, आँखें गीली होना (पृ. १७१) आदि ।

जीरो रोड – अँधा क्या चाहे, दो आँखें (पृ. ७), मान न मान मैं तेरा मेहमान (पृ. ६४), दाल में काला (पृ. ६५), घोड़ा बेचकर सोना (पृ. ३५८) आदि ।

पारिजात - खून सफेद होना, हाथ धोकर पीछे पड़ना (पृ. ११), कान खड़े होना, घिग्घी बँधना, नजरें मिलाना, धक् से रहना (पृ. ६३) आदि ।

कागज की नाव - नमक मिर्च लगाना (पृ. १२०), डेढ़ ईंट की मस्जिद बनाना (पृ. १३४), न घर का न घाट का (पृ.१३८), साँप सूँघना, जबान कटना (पृ.१५४) आदि ।

5.2.2.4 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त प्रतीक

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में पात्रों एवं उससे संबंधित घटनाओं के चित्रण में प्रतीकों का प्रयोग किया गया है, जैसे- "सूरत-शक्ल मां जवानी का

सुनील दत्त है ।”[1], यहाँ सुनील दत्त सुन्दरता का प्रतीक है । “अरे जहीर तो गाय है गाय... ।”[2], यहाँ गाय जहीर के सीधेपन का प्रतीक है । “ख्वाब में सिपतुन ने देखा, वह एक जंगल में पेड़ों के बीच चल रही है । जंगल है कि खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहे हैं ।” [3], यहाँ जंगल परेशानियों से घिरे सिपतुन के एकाकी जीवन का प्रतीक है ।, “जहीर जहर का प्याला पीकर जिन्दगी का रंग बदल चुका था ।”[4], यहाँ जहर का प्याला परिस्थितियों से समझौता करने का प्रतीक है ।, “मेरे भाई को कान्ता ने ताबीज़ खिला-खिलाकर वश में कर लिया है और मुझे भी तबाह कर डाला है ।”[5], यह समाज में फैले अंधविश्वास का प्रतीक है ।, “हाँ, या तलाक दो या फिर मुझे अलग रखो या अपने साथ ले चलो ।”[6], यह स्त्री चेतना और मानवीय अधिकारों के प्राप्ति का प्रतीक है । “मौत से नहीं डराओ मुझे, किसी को तो शुरूआत करनी पड़ेगी फिर ‘क्योंकि’ क्यों ?” [7], यह मलकानूर के साहस और अपनी शर्तों पर जीने की प्राथमिकता का प्रतीक है । “ कभी नहीं, जानती हूँ वहाँ जाकर आपके बड़के चचा और उनके दामाद हमारे साथ क्या करेंगे ... नफ़ीसा भाभी की जलती लाश हम भूले नहीं है ।”[8], यह विद्रोही स्त्रियों के अंजाम का प्रतीक है । “अपने अंदर चलते-चलते यह लड़कियाँ अक्सर थककर बैठ जाती है, मगर हार नहीं मानती है । क्योंकि उन्हें यकीन है कि एक दिन जिन्दगी करवट जरूर बदलेगी ।”[9], यह विपरीत परिस्थितियों में

---

1. शर्मा, ना. *अक्षयवट*. पृ. 49.
2. शर्मा, ना. *अक्षयवट*. पृ. 195.
3. शर्मा, ना. *अक्षयवट*. पृ. 218.
4. शर्मा, ना. *अक्षयवट*. पृ. 270.
5. शर्मा, ना. *कागज की नाव*. पृ. 192.
6. शर्मा, ना. *कागज की नाव*. पृ. 243.
7. शर्मा, ना. *कागज की नाव*. पृ. 243.
8. शर्मा, ना. *कागज की नाव*. पृ. 243.
9. शर्मा, ना. *अजनबी जज़ीरा*. पृ. 67.

आशा का प्रतीक है, आदि ।

5.2.2.5 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त पात्रानुकूल भाषा-शैली

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में वर्णित पात्र समाज के प्रायः सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व करते है यथा- शिक्षित, अशिक्षित, अफसर, नौकर, माली, आया, बावर्ची आदि । अतः परिवेश के अनुरूप इनके उपन्यासों में पात्रों के द्वारा भाषा का चयन दृष्टि गोचर होता है, जैसे -

ठीकरे की मंगनी- महरुख से न रहा गया, उसने जुम्मन नाई से बात की । महरुख की बात सुनकर वह हाथ का बक्सा जमीन पर रखते हुए बोला : “अरे मोर बिटिया रानी । इ मुए पैसे में अब कुछऊ नाही रखा है ।हम तो चाहित हब कि लड़कवा चार अच्छर पढ़कर कन्स्टर (कलक्टर) न बने तो कम से कम चपरासी-चौकीदार तो लग जाए । सच जानो बिटिया ! इस धंधे में अब धेले की आमदनी नहीं रह गई है, मियां लोग अपनी हजामत खुद छील लेत हैं, और तो और नाखून भी खुद काट लेत हैं ।” (पृ॰ १५६) आदि ।

शाल्मली- एक दिन बड़ी भाभी ने जल कर कह ही दिया, “बेचारा हमारा देवर क्या जाने लड़कन-बालन का सुख ? उसे तो इनकी हँसी भी शोर लगती है । वर्षों गुजर गए बहूरानी से चूहा तक पैदा न हो सका ।”

“मुँह नहीं देखती, सुखकर खटाई हो रहा है । लुनाई के स्थान पर बाँझपन उतर आया है ।” छोटी हँसी ।

“एब्सर्ड” नरेश भुनभुनाया ।

“अब देवर जी, हमसे अंग्रेजी-वंग्रेजी तो छोड़ो न ! इस भाषा में बतियाना हो, तो अपनी मेम साहब से बतियाया करो ।” बड़ी भाभी ने मजाक किया ।(पृ॰१५३) आदि ।

जीरो रोड- "आप तो जानते हैं, दोनों गोदाम की चौकीदारी पर बैठते हैं। साथ में पाकिस्तानी और नेपाली भी है। शारजाह से गाड़ी आत है और ताँबे के तार का रोलवा ओपर चढ़ाए देत है। शारजाह के ओपन बाजार से सऊदी चला जात है। हाथ बढ़िया गरम हो रहा है मगर वह दिन दूर नहीं जब इनका बजा फटेगा। तब कहीं के न रहिहें जब अंगूठे की तरह आँख की पुतली का फोटो ले इनका देश के पते पर भेजिहें।" संतोष ने कहा। (पृ॰ २९६) आदि।

पारिजात- "तुम एका बहुत सर चढ़ा रही हो !" गफूर ने बाबर्चीखाने में आकर सलमा से कहा। "हमार का गलती है ? फितूर तुम्हारे दिमाग में है। बटलर का लड़का बटलर होगा, यह कैसे समझ लियो ?" (पृ॰ १३३) आदि।

कागज की नाव - "कइसन बाड़न बिन्दू ? मझली भौजी कमरे से निकलीं तो उनकी नजर बिन्दू पर पड़ी। "राम-राम, ठीक बानी दीदी... भौजी।" इतना कह बिन्दु ने जबान काटी फिर हल्के से हँस दी। बिन्दू उसी गाँव की लड़की है जहाँ की शमा की मझली बहू तस्लीमा है। (पृ॰ १४०)

गोलू ने लंबी गहरी सांस ली फिर धीरे से पुकारा, "दादा ! ..... दादा सुत गइलआका ?" कोई जबाब नहीं मिला तो उसने करवट बदली और सोने की कोशिश करने लगा। तभी उसके कानों में गाने की आवाज आई तो उसे डर लगा और बड़बड़ाया- "आधी रात के इ कौन चुड़ैल गावततीया ?" (पृ॰ ८५) आदि।

अजनबी जजीरा - 'तुमने कभी मेरे बारे में कुछ जानना नहीं चाहा, ऐसा क्यों ?' शिकवा भरे शब्दों में मार्क ने पूछा।

'मैंने ही कहाँ तुम्हें अपने बारे में बताया है, जो तुमने जाना चाहा वही तो जान पाए।' बड़े दिलरूबा अंदाज से समीरा ने कहा।

मार्क मुस्कुरा पड़ा फिर गुनगुना उठा, 'आयम सिक्सटीन, यू आर सेवेनटीन.... तुमने साउंड ऑफ म्युजिक देखी है ?"

'हूँ' समीरा ने हाँ में सिर हिलाया फिर उसी टोन में गुनगुना उठी, 'आयम थर्टीफाइव एंड यू आर....।'

'फोर्टी' , मार्क ने खाली स्थान भर दिया । (पृ॰ १३४) आदि ।

कुंइयाँजान - "डाक्टर साहब ! कल रात से एका पेट पिराए रहा है । चूरन, नेबू-पानी सब दिया, मगर.... ।" माँ ने आँसू पोछते हुए कहा ।

"घबराने की बात नहीं, बस ध्यान रखो कि पीने का पानी साफ हो । मैं दवा दे रहा हूँ ।" सैंपल की आई दवाओं से उसने एक शीशी उठा माँ को थमाई । (पृ॰४९)

"माई गॉड ! तकिया पर छिपकली ! हाशिम इसका मतलब है, तुम स्प्रे ठीक से नहीं करते हो ।" शकरआरा गुस्से से बोली और डरकर दो कदम पीछे हट जमाल से सट गई । "कैसी मोटाय रही है कमबख्त ! कीड़ा-मकोड़ा खाय-खाय के ।" आया हैरत भरे स्वर में बोली । (पृ॰ ५१-५२) आदि ।

5.2.2.6 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त अलंकारिक भाषा-शैली

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में अलंकारिक भाषा-शैली का व्यापक प्रयोग किया गया है, जैसे -

उपमा अलंकार -

सात नदियां : एक समन्दर - 'कैसी फरिश्ते जैसी मासूमियत चेहरे से बरस रही है !' (पृ॰ १५८) आदि ।

शाल्मली- 'मन इस गर्म हवा में भी हरसिंगार की तरह खिला हुआ था' (पृ॰ १३७) आदि ।

ठीकरे की मंगनी- 'दिल पत्ते की तरह धड़क रहा था' (पृ॰ ११५) आदि ।

कुंइयाँजान - 'माँ के मोटे-मोटे आंसू मोतियों की तरह उनकी गालों पर लुढ़कते रात- दिन देखे थे ।' (पृ॰ १९०) आदि ।

जीरो रोड- 'रात का सन्नाटा आसमान पर ऐसे पसरा था जैसे किसी डोमनी का काला मलगिजा दुपट्टा जिस पर टके सितारे, अपनी आव खो चुके थे ।' (पृ॰ ३६४) आदि ।

पारिजात - 'गंध चारो दिशा में ऐसी फैलत रही, जैसे भोर का उजियारा ।' (पृ.६३), 'कभी लगता वह बच्ची की तरह रस्सी कूद रही है तो कभी लगता कि वह कार चलाती आगरा हाईवे पर है ।' (पृ. १४८) आदि ।

अजनबी जजीरा- 'जमीन में गहरा शिगाफ किसी अंधे कुएँ की तरह उन्हें आगोश में ले रहा था ।' (पृ॰ ३७), 'समीरा का दिल पतझड़ के पत्ते की तरह सुर्ख, पीला, भूरा हो उठा ।' (पृ॰ ६१) आदि ।

अनुप्रास अलंकार -

सात नदियां : एक समन्दर - 'इससे पूछो कि इस कम्यूनिस्ट कुतिया को किस खूनी जल्लाद ने बहकाया है ?' (पृ॰ १५८) आदि ।

शाल्मली- 'इस घर में मेरी मेहनत की महक अवश्य है, पर मानुष गंध नहीं ।' (पृ॰ १७१) आदि ।

ठीकरे की मंगनी- 'रुपया परखे बार-बार, आदमी परखे एक बार' (पृ॰ ९७) आदि ।

कुंइयाँजान - 'जो उनके बस में था मोटा-झोटा, खिलाया-पिलाया और दीनी तालीम दी ।' (पृ॰ १६०), 'खुद खाओ, दूसरों को खिलाओ! खूब बेटा खूब !' (पृ॰ ८७) आदि ।

जीरो रोड- 'इसलिए नीम की डाली पर बैठा काँव-काँव करता कौआ उन्हें फूटी आँख नहीं भा रहा था ।' (पृ॰ २१) आदि ।

पारिजात- 'औरत रही, भूत रही, जो भी रही, नासपीटी अप्सरा रही ।' (पृ.६३) आदि ।

कागज की नाव- 'अपना घर उजाड़ा, बेटी का घर उजाड़ना चाहा और अब दूसरी बेटी के घर पर उनकी नजर गड़ी हुई है ।' (पृ॰ १२१), 'उसने अपने को पसीने में नहाया पाया ।' (पृ॰ १२२) आदि ।

अजनबी जजीरा- 'कलस्टर बमों के धमाके कानों के पर्दे फाड़ने लगे ।" (पृ॰ ३७), "बार-बार उसके दिमाग में बाजार का दृश्य उभर रहा था ।' (पृ॰ ३६) आदि ।

उत्प्रेक्षा अलंकार -

सात नदियां : **एक समन्दर -** 'मलीहा और सूसन को देखकर पहले ठगी-सी खड़ी रही फिर जैसे सपने से जागी हो ।' (पृ॰ २३३) आदि ।

ठीकरे की मंगनी- 'बड़ी देर तक सुन-सी बैठी रही जैसे उसको लकवा मार गया हो' (पृ॰ ९७) आदि ।

कुंइयाँजान - 'चेहरे पर गरम-गरम सी भाप उठती महसूस हुई और माथे पर पसीना छलक आया ।' (पृ॰ २२५) आदि ।

जीरो रोड- 'आँखें लाल-सी लगी' (पृ॰ २९५) आदि ।

पारिजात- 'सब चीजें एक साथ उनके जेहन में गुडमुड-सी हो रही थी ।' (पृ.१४८) आदि ।

कागज की नाव- 'महजबीं को झटका-सा लगा ।' (पृ॰ २३३) आदि ।

अजनबी जजीरा- 'सब नीम मुर्दा-सी एक दूसरे पर गिर पड़ी ।' (पृ॰ ३७), 'वह झल्लाई-सी उठी और सामने वाली अलमारी के पट खोली ।' (पृ॰ ५९) आदि ।

पुनरुक्ति अलंकार -

सात नदियां : एक समन्दर - 'बहुत बड़ा बाजार है जहाँ पर तरह-तरह की चीजें बिक रही है ।' (पृ॰ १६४), 'मेरी सारी सहेलियाँ एक-एक कर छूट गई ।' (पृ॰ २३३) आदि ।

शाल्मली- 'भींगे-भींगे से बोझ से लदे झुके-झुके वृक्ष.... ।" (पृ॰ १२२) आदि ।

ठीकरे की मंगनी- 'चपरासी अन्दर से भागा-भागा आया' (पृ॰ ९९) आदि ।

कुंइयाँजान - 'सुख की असीम अनुभूति से उसका अंग-अंग पुलक उठा ।' (पृ॰ ८०), 'बूढ़ा अंधा फकीर घर-घर भीख मांगता घूम रहा था ।' (पृ॰ ८०) आदि ।

पारिजात- 'लंबे-लंबे बाल, बड़ी-बड़ी आँखें, गले में हँसली, कान में झुमके ।' (पृ॰ ६३), 'सुमित्रा के जाने के बाद खोई-खोई-सी फिरदौसजहां बैठी रही ।' (पृ॰ १४८) आदि ।

कागज की नाव- 'उनका रोना लम्हा-लम्हा बढ़ रहा था ।', 'लिबास तार-तार है और पैर बिना चप्पलों के, पत्थरों की नोंकों से कट-कट कर घायल है ।'(पृ॰१२२) आदि ।

5.2.2.7 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त वर्णनात्मक-शैली

शाल्मली- 'जब से यह शंकवाकार काँटे वाला वृक्ष फूला है, कितनी तरह की पक्षियों से यह भर उठा है । कभी मैना, कभी बुलबुल, कभी गुरसलें, कभी शकरखोर और तो कभी कौवे तक इस फूल के प्याले में अपनी चोंच डालकर रस पीते हैं । शहद की मक्खियों की भिनभिनाहट और पचासों फीट तक रेंगते ये चींटे केवल पुष्प रस पान करने के लिए इतनी ऊँचाई पर चढ़ने का जोखिम लेते हैं । एक चहचहाट भरा उजाला, एक उल्लासित उत्सव का सा आनन्द इस वृक्ष ने पूरे बगीचे के वातावरण में भर दिया है ।' (पृ॰ १०५) आदि ।

ठीकरे की मंगनी - 'दिल्ली कितना बदल गई है । महरुख ने महानगरी का वैभव आंका, बड़ी-बड़ी इमारतें, ऊंची आसमान को छूती अट्टालिकाएं, सामानों से भरे लकदक बाजार, चमकती दूकानें, लंबे बल खाते पुल, कारों की रेल-पेल ; - महरुख को चारों तरफ फैली चमक-दमक देखकर लगा कि प्रगति इसी का नाम है । तरक्की इसी को कहते हैं । पच्चीस सालों में दिल्ली, वह पुरानी दिल्ली जो उसने देखी थी नहीं रह गई थी बल्कि उपर से नीचे तक बदल गई थी । बच्चा जवान हो जाता है और जवान बूढ़ा ।' (पृ॰ ८१) आदि ।

कुंइयाँजान - 'बारात बड़ी शान से दरवाजे पर आकर लगी । सजावट और इंतजाम में कोई कमी न थी । लड़के वालों की खातिर जम कर हुई । शाम को पानी आ जाने से कमाल के कमजोर चेहरे पर रौनक लौट आई थी और जमाल खां भी अपने मनमौजी मूड में आकर लतीफों पर लतीफें सुनाकर समधियानेवालों को कहकहे पर कहकहा लगाने पर मजबूर कर रहे थे ।' (पृ॰ १६४) आदि ।

जीरो रोड- "मेले के दिनों में गंगा के किनारे इतने रंगीन हो उठते हैं कि पूछो मत, दूर तक जाती रंग-बिरंगी पताकाओं को फहराती नावें और चप्पुओं की छप-छप, अजीब समाँ बाँधती हैं । कोहरे में डूबी नदी सूरज के उगने के साथ

कैसे अपने चेहरे से धीरे-धीरे कर घूँघट हटा अपना मुखड़ा दिखाती है कि दिल अपने आप सीटी बजाने का करने लगता है ।” (पृ॰ ६२) आदि ।

पारिजात- ‘सफेदा की लाल चित्तियोंवाली किस्म का कहना ही क्या ! आप जरा कुदरत का करिश्मा देखें, लाल बीही उपर से सफेद और अंदर से लाल होता है । सुर्खा उपर से लाल होता है और अंदर से गूदा कच्चे मक्खन जैसा सफेद । सुर्खा तो नबाब ईसा के बाग के मशहूर थे । सुर्खा को ललका भी कहते हैं । संगम अमरूद ऊपर और अंदर दोनों एक से लाल होते हैं । इलाहाबाद में कभी दो सौ अमरूदों की किस्में थी, जो पुर्तगाल वालों को भी नसीब नहीं हुई होंगी, मगर व़क्त के साथ हर चीज अपने उतार पर आती है तो खुसरू बाग में कई किस्मों को संभाल कर रखा है, जिसमें दो पेड़ ‘बेदाना’ के भी बचे हुए हैं ।’(पृ॰ १५) आदि ।

कागज की नाव - ‘अगर जरूरी न होता तो वह हरगिज महनाज को पुकारने की हिमाकत न करता, यह अलग बात थी कि उसे महनाज बहुत प्यारी लगती थी । वह उसके क्लास में थी । कभी उससे घुलमिल कर बात नहीं हुई थी । केवल सुना भर था कि अपनी सहेलियों में सबसे घमंडी है । वैसे थी भी सबसे सुन्दर ! चलती थी तो फ्राक का घेरा ऐसा बल खाता कि लगता, लहरों को चीरती कोई जल परी आगे बढ़ रही हो ! नर्म-चमकीले बाल, कन्धे पर झूलते हुए । सुडौल पैर जिसमें नाजुक सैंडिलें होती । इस समय वह उपर से नीचे हल्के नीले रंग के कपड़ों में थी जो उसके सुर्ख सफेद रंग पर फब रहा था ।’ (पृ॰ १५) आदि ।

अजनबी जजीरा - “फूलों से लदे नाजुक पेड़ और लतरें थी । रसीले फलों का भूला स्वाद था । नर्म-मुलायम हवा की थपकियाँ थी । आदम बाग का वह इकलौता हरा-भरा दरख्त था, जिसे देखकर वे चीखी थी । सर्द हवाएँ उसकी काली चादर

को किसी आवारा लड़की के दुपट्टे की तरह उड़ा रही थी । आहिस्ता-आहिस्ता उसके उठते कदम किसी बीमार औरत की तरह उसे मौत के दहाने की तरफ ले जा रहे थे । बदन काँप रहा था और आँसू थम नहीं रहे थे । उसके हाथ अपने चारों तरफ लपेटी चादर को इस तरह पकड़े थे जैसे उम्मीद की आखिरी शमा को वह दिल में जलाए हुए है । उसके सामने हाँफता चेहरा उभरा और उसने अपनी आँखों से बढ़ते अंधेरे को ताका और कदम तेज कर दिए ।" (पृ. ६६) आदि ।

5.2.2.8 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त पत्रात्मक-शैली

पारिजात-

'प्यारे बेटे !

तुम मेरे अंश हो ....

....

तुम्हारा डैडी

रोहन दत्त' (पृ. ३८०-३८२), आदि ।

कागज की नाव -

'लासएंजिलिस

4 जुलाई,

2014

प्यारे अज्जू,

दिली दुआएं हम सबकी तरफ से कुबूल करो ! हम खैरियत से हैं ।

....
..

....

.

बच्चों की तरफ से सलाम, अम्मां-अब्बा और भाभी की तरफ से तुम सबको दुआएं ।फूलो, फलो, आबाद रहो । खुदा तुम्हें अपनी हिफाजत में रखे ।

---तुम्हारा बड़ा भाई' (पृ॰ ११६-११८)

'सिवान,

२०१४

भाईजान,

आदाब ।

आपका नवाजिशनामा मिला । पढ़कर दिलपर अजीब सी कैफियत तारी हुई ।

....

अम्मी, अब्बा, भाभी को हम सबकी तरफ से दस्तबस्ता सलाम और बच्चों को दुआ ।

खुदा हमें जल्द मिलवाए ।

---माजरत के साथ

आपका छोटा भाई अमजद' (पृ॰ १३६-१३७)

आदि ।

5.2.2.9 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त नाट्य-शैली

सात नदियां : एक समन्दर -

"तुमने जिन्दगी का यह रूख क्यों अपनी ओर मोड़ा अख्तर ?"

"बस यूँ ही ।" अख्तर ने टाला ।

"फिर भी ?" सूसन ने पूछा ।

"जो कहूँगी, उसे तुम लोग क्या समझोगी ?"

अच्छा जी, तो आप इस बीच बहुत समझदार हो गई हैं ?" परी हँस पड़ी ।

"सच मजाक न करो, इस राह में खतरा है, देख नहीं रही मलीहा का हाल ?"

"मलीहा किसी के नाम को लेकर रो रही है । मेरे लिए रोने वाला कौन बैठा है ?"

"अच्छा भावुक न बनो, हकीकत बताओ । कारण क्या है ?" (पृ॰ ५५) आदि ।

शाल्मली-

"शालू !"

"क्या ?"

"विदेश जाना चाहिए ?"

"अवश्य, पर क्यों ?"

"कमाने ।"

"मैं समझी घूमने ।"

"घूमना तो कमाने के साथ हो जाएगा ।"

"ठीक है ।"

"ठीक क्या ? एक एजेंट से बात हुई है ।"

"कहाँ भेज रहा है ?"

"तुम मजाक समझ रही हो ?"

"मैं तो खुश हो रही हूँ ।" (पृ॰ ७६) आदि ।

पारिजात -

"कुफ्र? तुम नहीं समझोगे यार !" रोहन झँझला पड़ा ।

"समझता हूँ जनाब ! गुस्ताखी न समझें तो एक शेर मैं भी अर्ज करूँ ?"

"कितना पढ़े हो ?" रोहन ने शक-भरी नजर डाली ।

"एम॰ ए॰ किया था उर्दू में, लखनऊ यूनिवर्सिटी से"

"फिर ?"

"नौकरी नहीं मिली । नौकरी पाने के लिए जितनी रिश्वत देनी थी, वह नहीं दे पाया बस । कभी-कभी सोचता हूँ कि दरअसल मैंने सब्जेक्ट ही गलत चुना था ।" (पृ॰ ४८७) आदि ।

अजनबी जजीरा -

"ठहरो ! मुझे तुमसे बात करनी है ।"

"मुझे जल्दी घर लौटना है ।"

"हम कभी दो इंसानों की तरह सहज लहजे में बात कर सकते हैं ?"

"इसकी जरुरत क्या है ?"

"कभी-कभी जो दिखता है वह वैसा होता नहीं है ।"

कितनी पुरानी बात दोहरा रहे हैं आप ? मुझे लगता है जो दिखता है अक्सर वही सच होता है ।"

"तुम कभी अपनी टीचर वाली भूमिका से बाहर निकल पाओगी ?" (पृ॰ ६३) आदि ।

5.2.2.10 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त तर्क-वितर्क-शैली

सात नदियां : एक समन्दर - "वह तीनों इस कब्रिस्तान में नहीं गाड़े जा सकते ।" एक ने गर्दन अकड़ाकर कहा । "मगर क्यों ? वह यहाँ के निवासी है । उसके बाप दादाओं की कब्रें इसी कब्रिस्तान में हैं । क्या आप उसे नये कब्रिस्तान में दफनवाएँगे ? इस हिसाब से तो सबके अपने-अपने कब्रिस्तान बन जाऐंगे ?" "जो भी हो ! हमनें एक बात कह दी, उसी पर अटल हैं ।" तीनों ने कहा । "बात आपकी है, मजहबी किताब की नहीं है, आपके पास किसी किस्म का आर्डर है ? दिखायें जरा ।" अब्बास ने लहजे में सख्ती लाकर कहा । "आर्डर के कागज की क्या जरूरत है जब कि हम स्वयं यहाँ पर मौजूद हैं ।" एक ने अकड़ते हुए

कहा । "लाश दफनाई नहीं गई तो बात बहुत बढ़ेगी । कातिल को यह गाँव वाले जानते हैं । कानून को हाथ में न लें तो बेहतर रहेगा आप लोगों के लिए ।" अब्बास ने फैसलाकुन लहजे में कहा । (पृ॰ २०६-२०७) आदि ।

शाल्मली- "यह नौकरी है । बिना कारण दिये मैं थोड़े बैठ सकती हूँ ।" शाल्मली ने बड़ी सहिष्णुता से कहा ।

"कारण-वारण कुछ नहीं, कह देना मेरा पति पसंद नहीं करता इस तरह मेरा टूर पर जाना, समझी !"

"सभी औरतें इस तरह की अर्जी देने लगे, तो हो चुका काम । यह पति की नहीं सरकार की नौकरी है, उसके प्रति कर्त्तव्य की अवहेलना...... ।" शाल्मली ने कहना शुरू किया । (पृ॰- १२७) आदि ।

ठीकरे की मंगनी- "घर का मतलब अगर ईंट, गारे, पत्थर की चहारदीवारी होता है और शौहर का मतलब जिन्दगी की बुनियादी जरुरतों का जरिया, तो फिर वे दोनों चीजें मेरे पास मौजूद है । यह दीवारें और नौकरी जो मेरा सहारा है ।" किसी गहरी खाई में डूबी हुई महरुख की आवाज उभरी ।

"और इंसान की आदिम ज़रुरत ?" रफत ने चेहरा घुमाया ।

उसकी जरुरत को भी नकारा नहीं जा सकता है, रफत भाई, मगर समझौते के तहत... । उसकी जरुरत तो तब महसूस होती है, जब दिल में कशिश हो ।"

"क्या तुम्हारे दिल में मर्द के लिए नफरत पैदा हो गई है ? रफत ने उसे गौर से देखते हुए चिंतित होकर कहा ।

"नहीं, बिल्कुल नहीं, औरत की जिन्दगी के सारे क़रीबी व ज़जबाती रिश्ते मर्द से ही होते है । बाप, भाई, शौहर, महबूब, बेटा अहमियत को नकार कर औरत कहां जाएगी, रफत भाई? सवाल मर्द से नफरत का नहीं है, बल्कि सवाल उठता

है कि मैं आपके ख्वाबों में बसे घर की मालकिन बन सकती हूँ या नहीं ? मुझे लगता है, यह नामुमकिन है ।" महरुख ने सहजता से कहा ।(पृ॰ १२५) आदि ।

कुंइयाँजान - "क्या तब इंसान महत्त्वपूर्ण नहीं हो जाएगा कि उसके शरीर में आंसू और पेशाब के रूप में जल-स्रोत छुपे हुए हैं ?"

"नहीं, जब वह पानी नहीं पिएगा तो वह स्रोत भी सूख चुके होंगें !"

"फिर इंसान जिएगा कैसे ?"

"टेबलेट खाकर । आखिर साइंस केवल एटम बम ही थोड़ी बनाती जाएगी । ऐसी गोलियों का भी आविष्कार होगा जब इंसान को खाने-पीने की जगह माह में केवल दो गोली खानी पड़ेगी ।"

"हो सकता है तुम्हारे कथन में सच्चाई हो, क्योंकि तब तक खेती सूख चुकी होगी!" (पृ॰ २७१) आदि ।

पारिजात - 'अगर... अगर ऐलेसन एक दिन लौट आई तो ? बच्चे की खातिर रोहन को उसे अपनाना पड़ा तो ? क्या होगा रूही का ?" उनके जेहन में सारे सवाल इश्कपेंचा की बेल बनकर चिपक गए । 'रूही जिस तरह कह रही थी कि वह काजिम को नहीं भूली है तो हम कैसे मान लें कि रोहन ऐलेसन को भूल जाएगा ? अगर पुरानी मोहब्बत ने जोर मारा तो.... तो ?' (पृ॰ ४८४) आदि ।

कागज की नाव- "मुझे नहीं पता मैं यह सब क्यों सोच रही हूँ ? क्यों वह घर छोड़ आई मगर मैं इतना जानती हूँ, मैं इससे ज्यादा सह नहीं सकती थी । मेरे ऊपर इल्जाम लगा जिसने मुझे नफरत से भर दिया है । मैं उस घर में न लौटूंगी, न मायके जाउंगी । अब मेरा रिश्ता किसी से नहीं है ।"

"बेटे से ?"

"बेटा वे लोग नहीं देंगे । हमको चाहिए भी नहीं, लड़का पास रहेगा तो कल मैं भी इसी तरह उसकी बहू को सताऊंगी या वह मुझे तड़पाएगी, इन सारे रिश्तों से क्या मिलना है, कुछ नहीं ।"

"गुस्से में ऐसा कह रही हो ?"

"अपने हालात के चलते, या तो मर खप जाऊं या फिर आजादी पा लूं ।"

"इस तरह बातें करना कहां से सीखीं ?" महलका उसका जबाब सुन सन्नाटे में आ गई ।

"हमारी तरह जो जिएगा ऐसी ही बात करेगा.... हम जैसे को बोलने कौन देता है जो हमारा दर्द कोई समझे ?" (पृ॰ ८०) आदि ।

अजनबी जजीरा - 'काश उम्मी ! हम लड़के होते तो आपका दुख इतना गहरा नहीं होता न फिक्र में आप यूँ पिघलती ।' वफा ने अजीब स्वर में कहा ।

'तब दूसरा खौफ मेरा जी हलकान कर देता । देश के कानून के मुताबिक सबको जंग में जाना होता, मौत और जंग के बीच पीसती मैं... कमसिन लड़कों की आबरू की क्या मैं हिफाजत कर पाती ?' जैसे समीरा ने खुद से पूछा हो ।

'उन्हें तुम उम्मी ! हमारी तरह यूँ बाँधकर नहीं रख सकती थी । यह कैदखाना है... यह घर.... यह मुल्क... हमारे लिए कैदखाना, अब नहीं सहा जाता.... अब्बु तुम क्यों चले गए ?' सबा की उत्तेजना कमजोरी बन आँसूओं में ढ़ल गई । (पृ॰ ५८) आदि ।

5.2.2.11 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त आत्मकथात्मक-शैली

सात नदियां : एक समन्दर - डॉ॰ नावेद की भृकुटि तन गई । सोच का दायरा फिर सिमटने लगा । "एक ही बिंदु पर जाकर मैं ठहर जाता हूँ । आखिर यह जंग क्यों हो रही है ? फैसला कब होगा, कौन करेगा ? कब तक मैं ... कोई तो मसीहा बन कर आए ।" (पृ॰ २७९) आदि ।

शाल्मली- 'मैं केवल एक सूखा वृक्ष भर रह गई हूँ । न फल, न फूल, न शाख, न पत्ती, न छाया, न ठंढ़क, ऐसे सूखे वृक्ष की शरण में भला कौन आना पसंद करेगा ? धरती ने भी जैसे अपने स्रोत समेट लिए हैं, तभी तो मेरी जड़े तरावट को तरसती, धरती छोड़ने लगी है । ऐसा सूखा छाया रहित, ठूंठ वृक्ष तो बस जलाने के काम का रह जाता है, लपटों के बीच कोयला बनती काया ।' (पृ॰ ०९) आदि ।

ठीकरे की मंगनी- "जब रिश्तों का भ्रम टूट जाए, तो फिर जीने का लुफ्त ही क्या ? इन्सान के अन्दर की ललक और उमंग कहीं दम तोड़ देती है । इस गाँव में जब तक पढ़ाती हूँ, बहली रहती हूँ, मगर जहाँ तन्हा हुई, पिछला गुजरा हुआ न चाहने पर भी जहन पर छाने लगता है । हमेशा अपने से जबाब तलबी और जबाबदेही की यह आदत आज कितना दुःख पहुँचा रही है । न जुर्म का पता चलता है और न मुजरिम का । किसे सजा दे, किसे माफ करे ! एक खोखलापन है जो दीपक की तरह उसे खाए जा रहा है ।" (पृ॰ २७९) आदि ।

पारिजात- "कौन देखकर मुझे यकीन करेगा कि कभी मैं वशीर के दोस्तों के साथ गल्फ खेलती थी । उन्होंने बग्घी, कार, हवाई जहाज, ट्रेन जाने किन-किन सवारियों पर बिठा कहाँ-कहाँ की सैर नहीं कराई और क्या-क्या न दिखाया । मगर इस बार मुझे व्हीलचेयर पर तन्हा छोड़कर अकेले सफर पर चल दिए । जिन्दा होते तो मेरी यह हालत उनसे देखी न जाती कि उनकी कूहेकाफ़ की परी अब एक कमरे की कैद दुनिया की हर लज़्ज़त से बेगानी हो चुकी है ।" (पृ॰ ४८५) आदि ।

कागज की नाव - "गुनाह में तो मैं भी बराबर की हिस्सेदार थी मगर मैने सारा इल्जाम राशिद पर थोपकर ठीक नहीं किया, उसको बढ़ावा तो मैंने ही दिया था । राशिद ने कई बार मेरी मदद की थी । वह मुझे अच्छा लगने लगा था

फिर मैंने उसे अपमान भरी खाई में क्यों धकेला.... अच्छा नहीं किया मैंने.... क्या सोचता होगा मेरे बारे में वह... खुदगर्ज... बेवफा.... मतलबपरस्त.... मैं... डर गई थी । उसकी इस तरह की हिम्मत से मैं दरअसल होश में आ गई थी । वरना.... वह गुनाह की घाटी.... उफ !" (पृ॰ ७१) आदि ।

कुंइयाँजान - "वह हमेशा से वैंप की तरह घर-बाहर पेश करते आए हैं । उन्होंने कभी मेरी मर्जी, मेरी राय की कद्र नहीं की, बस मेरे और अपनी माँ के बीच उन्होंने गहरी खाई खोदने का काम किया, जिसकी वजह से हम कभी नहीं मिल पाए । इन सारी बातों का खतावार मुझे ही समझा जाता है क्योंकि मैं बोल देती हूँ । अपना गुस्सा, प्यार, झुंझलाहट दबाकर एक झूठा परपंच कायम नहीं करती हूँ । जो सोचती हूँ बिना किसी लाग लपेट के बयान कर देती हूँ । इस साफ्गोई ने मुझे हमेशा सूली पर चढ़ाया है । बुरा बनकर जीना मुझे कभी अच्छा नहीं लगा ।" (पृ॰ २३२) आदि ।

अजनबी जजीरा - "मेरे सामने सिर्फ दो रास्ते है, एक अस्मत-फरोशी का और दूसरा किसी खुशहाल बुड्ढ़े से शादी करने का, ताकि बन्द दरवाजा खुल जाए वरना लड़कियाँ बागी होकर ऐसा कदम उठाएंगी जिसमे सिर्फ पछतावा ही हाथ आएगा । नौकरी का मिलना मुश्किल है, विदेश में पनाह लेना गैरमुमकिन और अब घर में सामान भी कौन सा बचा है जिसके बूते पर वह यह कह सके कि साल-दो साल कट जाएंगे ।" (पृ॰ ५९) आदि ।

5.2.2.12 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त विश्लेषणात्मक-शैली

सात नदिया : एक समन्दर - "एक दिन तय्यबा ने उसे बहुत समझाया था, उसका उत्तर उसने दिया, "तुमने बंजारन का जन्म लिया है, चाहरदीवारी में जम के रहना तुम्हें पसंद नहीं है । तुम्हारी जिन्दगी का हर पड़ाव तुम्हें सुख देता है तय्यबा, मगर मैं... मैंने जिन्दगी से केवल हुसैन को मांगा था । तुम्हारी तरह

दार्शनिक सुख की मांग नहीं की थी । मेरा सुख संसार हुसैन के साथ है । तुम्हारे लिए इश्क एक सामाजिक सुख का नाम है । मेरे लिए इश्क का अर्थ आत्मा है । मैं इस संसार में केवल सुख और वैभव की दुनियावी तलाश में नहीं आई हूँ, और न ही वह जीवन जीना चाहती हूँ । मेरे जीवन में हुसैन फूल बन कर गिरा, उसे मैंने अपना वजूद दे डाला, मैं पल भर भी उसके बिना कैसे जी रही हूँ, तुम्हें इसका अहसास नहीं हो सकता है । मैं वास्तव में अपने वजूद की आत्मा को जी रही हूँ... भावना की धरातल खड़ी हूँ मैं तय्यबा... खुदाया मुझे समझो, मुझपर अपना दर्शन मत लादो, मुझे समझाने के स्थान पर मुझे समझने की कोशिश करो ।” (पृ॰ ५४) आदि ।

शाल्मली- ‘शाल्मली का मस्तिष्क सदा मन पर भारी पड़ता । शायद इसीलिए वह भावना के स्तर पर टूट कर बिखर नहीं पाती । चाहे बी॰ए॰ में दूसरी श्रेणी में पास करने का दुःख हो या मैनेजमेंट में दाखिला न मिलने की कसक हो, हर कमी तर्कों के दर्पण में देखकर संतोष कर लेती थी कि हर वस्तु हर इंसान के लिए न बनती है, न मिलती है । इच्छा मात्र ही उपलब्धि नहीं, जो उस मापदंड से जीवन नर्क या स्वर्ग बना डाला जाए । जीवन और उपलब्धियों का अपना एक तर्क है, अपना एक गणित है ।’ (पृ॰ १९) आदि ।

ठीकरे की मंगनी- ‘एक घर औरत का अपना भी तो हो सकता है, जो उसके बाप और शौहर के घर से अलग, उसकी मिहनत और पहचान का हो । ...मेरा अपना घर वही पुराना है, जहाँ मैं पिछले तीस साल रही हूँ । तुम लोग अपने-अपने घर लौट रहे हो, मैं अपने घर लौट रही हूँ । इसमें इतना परेशान होने की क्या बात है ?” (पृ॰ १९७) आदि ।

कुंइयाँजान - “रात को दिल्ली जाने वाले प्रयागराज एक्सप्रेस में लेटा-लेटा वह सोच रहा था कि इस पानी की समस्या में क्या सरकार को पूरी तरह दोषी

मानना उचित है ? इतनी बड़ी जनसंख्या, जो हर साल बढ़ती जा रही है, उसको प्रयाप्त जल उपलब्ध कराना क्या बहुत सरल कार्य है ? इस बात को वे माँ-बाप नहीं समझते जो कुत्ते-बिल्लियों की तरह बच्चे पैदा करते चले जाते हैं और परिवार नियोजन को स्वीकार करने में झिझकते हैं, यह मूर्खता करते कुछ लोग हैं, मगर उनकी यह लापरवाही सारे देश को कितनी मंहगी पर रही है !" (पृ॰ १०१) आदि ।

पारिजात - "मैं तो काउंसलिंग करते-करते इस नतीजे पर पहुँची हूँ कि यह वुमन्लिव को लेकर हमारा यह दौर सबसे ज्यादा काला-कलूटा है । चेतना बढ़ी है । कानून बने हैं । सहूलियतें मिली हैं आखिर किसलिए? दो शक्तिमान व्यक्तियों को डब्ल्यू-डब्ल्यू एफ की कुश्ती के लिए ? बरना बेचारी औरतें, जो वास्तव में दुखी हैं, रूई की तरह हर रोज धुनी जाती हैं, बिना कारण तलाक पाती हैं, खरचा पानी मिलता नहीं, उन तक यह कानून और उसका न्याय पहुँच ही नहीं पाता है ।" मारिया के लहजे में दुःख था । (पृ॰ ३०४) आदि ।

कागज की नाव - "आप को याद है पापा, दादा मुझे मधुबनी के गंगानाथ झा और उनके बेटे अमरनाथ झा के बारे में कहानी सुनाते थे जो बिहार के होकर बनारस में पढ़े और इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति बने, बाद में उनका बेटा अमरनाथ झा भी इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति मनोनीत किए गए और पूरे नौ वर्ष रहे और दोनों शिक्षा के क्षेत्र में बुनियादी काम कर गए । हम उतने बड़े न सही मगर छोटे पैमाने पर अच्छे कामों की बुनियाद तो डाल सकते हैं ।" (पृ॰ १७३) आदि ।

अजनबी जजीरा - "उसको बहुत-कुछ याद आ रहा था । उस याद ने फिक्र और बढ़ा दी थी कि पढ़ाई में पिछड़ जाने वाली इन लड़कियों का भविष्य क्या होगा ? इनको किस तरह की नौकरियाँ मिलेगी और किस तरह के जीवन

साथी ? उसके बदन में भय की लहर इस कदर दौड़ी कि कहीं .... कहीं उन्हें... नहीं !" (पृ॰ १०१) आदि ।

5.2.2.13 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त व्यंगात्मक-शैली

सात नदियां : एक समन्दर - "मजाक मत करो, मैं सच कह रहा हूँ । वह तस्वीरें जाने किस कपड़े व कागज की थी जो न फटती थी, न जलती थी ।"

"मौलवियों के चमड़े की होगी ।" दबे-दबे कहकहे गुब्बारे के तरह फट गए । (पृ॰ २७९) आदि ।

शाल्मली- "मुझे लगता है, मैं पति के साथ नहीं, बल्कि अतिथि के साथ रह रही हूँ और अतिथि तो हमारे समाज में भगवान का दूसरा रुप होते हैं । राजा होकर सुदामा के पैर कृष्ण ने धुलाए ही थे, सो उसकी आव-भगत अपना मन मारकर भी करनी है, अपने घर की दशा छिपा कर भी करनी है ।सेवा करना हमारा धर्म जो ठहरा, अब उससे मुकरना क्या ?" (पृ॰-१६७) आदि ।

कुंइयाँजान - "हमार कलेजा काहे बरे लगा? हम तो उल्टा तुमका देखकर खुश होत है कि राबिया की अम्मा आय गई हैं, अब घर का बेकार सामान किनारे लग जाई ।" (पृ॰ ७३) आदि ।

पारिजात- "सफेद औरतें एक दौर में अकेलेपन के कारण कुत्ते बहुत पालती थीं । अब कुत्तों से नफरत करती है क्योंकि वह पन्द्रह- बीस साल बाद मर जाते हैं, मगर इंसान का बच्चा उनको दफनाने के बाद भी जिन्दा रहता है ।आजकल इसी स्ट्रेटजी के चलते सब इंसानी बच्चों को कुत्ते के पिल्ले की तरह गोद ले रही है ।" (पृ॰ ३७५) आदि ।

कागज की नाव - आँसू बहाकर जब मास्टरजी हल्के हुए और होश में आए तो पास बैठी बीबी से पूछ बैठे, " तू बतावा का करी ?"

"हम ?" उनकी बीबी चौंक कर बोली ।

"तू हमसे अपना के हर बात में होसियार समझे लू... तू आखिर पांचवां फेल बाड़, तू बतावा ?"
सबकी नजरें मास्टरनी के चेहरे पर टिक गईं । फूफा ने मुँह पर हाथ फेर कर कहा, "भौजाई के अब्बा के बुला के पूछा, नतनी खातिर उनका दिल में बहुत प्यार बा !" (पृ० १५१) आदि ।

अजनबी जजीरा - "मैं चाहता तो नहीं था आर्मी में आना मगर घर के हालात ने मजबूर कर दिया ; अब मुक्त हो सकता हूँ... आजाद ।" उसने कहकहा लगाया । 'हजारों लोगों के खून से हाथ रँगने के बाद', जाने कैसे समीरा के मुँह से निकल गया । (पृ० ७०) आदि ।

5.2.2.14 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त भावात्मक-शैली

सात नदियां : एक समन्दर - "खालिद कहते हैं कि बेकार की चीजों के लिए आँसू मत बहाओ.... मैं पत्थर थोड़ी हूँ जो दिल पर चोट न लगे, आँसू न निकले.... मेरे कितने घर है ? एक ही तो घर था ? घर का लुटना, घर का टूटना, घर का तबाह होना खालिद क्या जानें ? उसके सीने में मर्द का दिल है ।औरत घर से कितनी जुड़ी होती है, यह मर्द नहीं समझ सकता... ।" (पृ० १५७) आदि ।

शाल्मली- "हम तो, बहू, री ! दासी थे । तुझे देखा, तो मन में सोचा कि चल कहीं तो औरत स्वतंत्र है । भयभीत भी हुई थी कि तुम निभाओगी भी या नहीं ? शहर की लड़की.... बहुत बातें सुन रखी थीं । इन वर्षों में तेरे साथ रहकर जान पाई, बहू, री ! औरत जन्मजली कहीं स्वतंत्र नहीं ।कहीं खूंटे से तंग बंधी, तो कहीं उसके गले में बंधी रस्सी थोड़ी लंबी या अधिक लंबी । अपना बेटा है । नौ महीने कोख में रखा, दूध पिलाया । तुझे तो मैंने जन्म नहीं दिया, मगर दोनों को देख रही हूँ । उसके व्यवहार से तू कितनी सुखी है, मैं नहीं जानती, बहू, री ! पर भगवान को साक्षी रखकर कहती हूँ, तेरे लिए मेरा मन कुढ़ता है ।

मैं बहुत दुःखी हूँ । क्या कहूं उसे ? मुझ अनपढ़ से वह सीख लेगा, मेरे उपदेश सुनेगा, मेरे लिए जिसके पास तनिक भी समय नहीं ?" (पृ॰ ९४) आदि ।

ठीकरे की मंगनी- "हम जानत रहे, दीदी, एक दिन आप लौट अइहैं ।" लछमिनियाँ ने आँखों पर आँचल रखते हुए उसका स्वागत किया । (पृ॰ १९७) आदि ।

कुंइयाँजान - "काश! कुछ महीने तुम और जी लेती तो समीना की गोद भराई की रस्म आज तुम खुद अदा करतीं !" (पृ॰ ३०४) आदि ।

पारिजात- "भाभी, मुबारक हो ।" प्रहलाद दत्त ने आगे बढ़ फिरदौस जहाँ को गले लगाया । "रिश्ते निभाना कोई तुम लोगों से सीखें । मुहब्बत-मुहब्बत में एक एहसान और हमारे सिर पर लाद दिया ।" (पृ॰ ४७६) आदि ।

कागज की नाव - "चाहती हूँ तुम इस घर को बड़े चाव से संवारो । जो चारो तरफ हो रहा है उसकी नकल न करना । ये सब ओछी हरकतें है । यहाँ का सब कुछ तुम्हारा है, मैं भी और बेटा भी । छीना-झपटी का कोई मतलब नहीं है । जीतोगी तो अकेली हो जाओगी । हारोगी तो हम सब की बन कर रहोगी और वही तुम्हारी असली जीत होगी ।" (पृ॰ १०२) आदि ।

अजनबी जजीरा - "मेरी कहानी सुन तुम रो रही हो !" समीरा की आँखों से टपकते आँसूओं को मार्क ने अपनी खुली हथेली में संभाला जो ठुड्डी से बह रहे थे । हथेली में जमा नमकीन बूँदों को उसने अपने होठों से लगाया फिर जाने किस जज्बे के तहत उसने समीरा को पूरी शिद्दत से अपने सीने से लिपटाया और किसी बच्चे की तरह फफक पड़ा, 'मैं बहुत तन्हा हूँ ।' (पृ॰ १३७) आदि ।

5.2.2.15 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त यथार्थ-शैली

सात नदियां : एक समन्दर - "मैदान-ए-जाले का वह दृश्य- कितने मर्द, औरत, बच्चे, लड़के-लड़कियाँ घायल हुए थे । तब से क्या हो गया मजीद को, किसी को भी छुरी से तरबूज काटता वह देखता तो उत्तेजना से भर उठता । लगता, कटे

सिर, छलनी सीने उसकी आँखों के सामने नाचने लगते थे । उस दिन पाँच लाशें आई थी । उनमें से भाई को जब मुर्दा समझ कर दफनाने के लिए लोग उठाकर कब्र में डाल रहे थे तो उसका दोस्त चिल्लाया था, "मजीद ! हमीद जिन्दा है, इसका बदन गर्म है ।" मगर थोड़ी देर बाद हमीद ने उसकी बाँहों में दम तोड़ दिया । पाँच लाशों को उस दिन बेहिश्ते जहरा में दफना कर आया था अपने प्यारे भाई, बहन, माँ-बाप को, तब से यह घर सूना-सूना, खून में डूबा, आँसूओं में तर, सफेद कफन से लिपटा उससे फरियाद करता है - जंजीरे तोड़ दो, जंजीरे तोड़ दो ।" (पृ॰३८), आदि ।

शाल्मली- "तू बड़ी स्वाभिमानी है, मैं जानती हूँ । कभी जवानी में मैं भी थी, फिर जैसे-जैसे जीवन में रचती बसती गई, जाना स्वाभिमान औरत का गहना नहीं रह जाता है, वहाँ जो बचता है, केवल धैर्य और बलिदान, जिसे सब कहते करुणा, बहू, री !" (पृ॰ ९४) आदि ।

ठीकरे की मंगनी- 'हवाई किले की सैर से महरुख लौट आई थी । अब उसकी समझ में यह बात आ गई थी कि वह रफत भाई के दिल व दिमाग में कभी नहीं थीं । वह तो रिश्ते के नाम पर एक पोस्टर थी, एक नारा थी, जिसे रफत भाई समाज की दिवार पर चिपका कर अपनी पहचान का झंडा ऊँचा रखना चाहते थे ।' (पृ॰६२) आदि ।

कुंइयाँजान - उस वक्त जमाल खां ने बेटे से कहा था, "मेरे पास तीन कमरों का छोटा मकान, बिना प्लास्टर का, चौक के पास मौजूद है, जिसका इल्म तुम्हारी माँ को नहीं है । मैंने उसको तुम्हारी दादी के लिए बनवाना शुरू किया था, ताकि वह दूर ही सही, मगर इसी शहर में रहें । मैं उनसे सुबह शाम मिल सकूंगा । फिर तुम्हारी छोटी अम्मी का घर भी पास था । अम्मा ने गांव जाने की जिद बांध ली थी । वहीं उनका इंतकाल भी हुआ । तब से वह मकान अधूरा-का-अधूरा

रह गया । तुम मुनासिब समझो तो वहां क्लीनिक खोल सकते हो । गुंजान बस्ती है । आस-पास ऐसे लोग रहते हैं जिनकी खिदमत एक डॉक्टर को करनी चाहिए ।" (पृ॰१०१) आदि ।

कागज की नाव - "औरत को लेकर समाज की यादाश्त बड़ी कमजोर होती है । खासकर तब जब सारा इल्जाम उस औरत पर ही थोपा जाने लगे । अब यह मशहूर हो गया कि बेचारे शरीफ लोगों को फँसा गई बदचलन.... ऐसी लड़की से खुदा बचाए जो शादी के बाद भी अपना तौर तरीका ना बदले ।"(पृ॰ ५७) आदि ।

अजनबी जजीरा - "मैं अपना बदन नुचवाती हूँ... अपने हम-शहरियों से... और क्या करूँ, ईमान को लेकर चाटूँ या इस्मत को लेकर नाचूँ ? देखो, अब मेरे पास इतने रियाल है कि मैं हफ्ता आराम से गुजार सकूँ... अल-बाकर मुझे गाली देता है, बदकार और बेवफा कहता है, शहवतरानी का इल्जाम देता है, फिर मेरे पैरों पर गिरकर फूट-फूट कर रोता है जब इन पैसों से उसके पेट की आग बुझाती हूँ, जिन्दगी का इतना बदसूरत चेहरा देखने के हम हकदार नहीं थे, जो हमने बोया नहीं वह हम क्यों काट रहे हैं ?" (पृ॰ २७) आदि ।

अतः हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकार मेहरुन्निसा परवेज एवं नासिरा शर्मा के उपन्यासों में शब्दों का चयन, वाक्य-विन्यास एवं उपयुक्त भाषा-शैली के उचित प्रयोग के कारण रचनाओं की प्रमाणिकता सिद्ध होती है ।

5.3 संदर्भ ग्रंथ-सूची

परवेज, मेहरुन्निसा (१९६९). *आँखों की दहलीज.* अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली.

परवेज, मेहरुन्निसा (१९७२). *उसका घर.* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली.

परवेज, मेहरुन्निसा (१९७७). *कोरजा*. वाणीप्रकाशन, नई दिल्ली.

परवेज, मेहरुन्निसा (१९८१). *अकेला पलाश*. वाणीप्रकाशन, नई दिल्ली.

परवेज, मेहरुन्निसा (२००२). *समरांगण*. वाणीप्रकाशन, नई दिल्ली.

परवेज, मेहरुन्निसा (२००४). *पासंग*. वाणीप्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (१९८४). *सात नदिया : एक समन्दर*. अभिव्यंजना प्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (१९८७). *शाल्मली*. किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (१९८७). *ठीकरे की मंगनी*. किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (१९९३). *जिन्दा मुहावरे*. वाणीप्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (२००३). *अक्षयवट*. भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (२००५). *कुंइयाजान*. सामयिक प्रकाशन,. नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (२००८). *जीरो रोड*. भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (२०११). *पारिजात*. किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (२०१२). *अजनबी जजीरा*. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद.

शर्मा, नासिरा (२०१४). *कागज की नाव* . किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली.

*****